16

Hindi
manuscript

Name:— Khem Kalūhal

by — Bana Ram

Date — 1907 = Bikrmi Page 60

Page — 60 Sixty

From:—

Harbhajan Singh Harcharan Singh
BOOK SELLERS
Bazar Mai Sewan, AMRITSAR.

1217

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

Hindi Ms.
616

K45

1217

खेमकौतुहल : हिन्दी भाषा

[illegible]

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

Harbhajan Singh Chawla
Antique Arts & Manuscripts Dealers
Bazar Mai Sewan, AMRITSAR.
CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ श्लोक ॥ लेवो इ गजमुख नमो
गौरी नंद ग्न नेद ॥ जाके सिमरन होत सुख पैन नमकी
वेद ॥१॥ नमसकार गुर देव कौं कीजे बार बार ॥ गुर गो
विंद न भेद है ताको जन सत उर धार ॥२॥ गुर गोविंद गोवि
द गुर गोविंद है गुर माह ॥ कहै भिंद जन ज्ञाह को गुरमै दे
खो ताहि ॥३॥ चौ० ॥ सिमरत कहै सुन हो रे भाई ॥ सतगुर
लेत वहुड कमाई ॥ जे धन ज्ञाद तो वौहड कमावै ॥ तारम
रे हू जीव [illegible] नेतै ॥ [illegible] ध नै फिर वाको लीजै ॥ होइ स्वधर्म
धर्म फिर कीजै ॥ [illegible] वौहड वौहड इह देह न होइ ॥ जे लख जु
तन करेगा कोइ ॥ [illegible] न है तो इ सन पाई ॥ वनी होइ सत तती

बै॰स
१

थजाइ॥ निरमल बुध जा हि कौ होई॥ धरम अधरम विचारे
कोइ॥ जातै देह सबी सब पाइ॥ बहु विध देउ तुजे सम जा
इ॥ ग्रंथ नेह इक के अनुसार दहो॥ भोजन करै जो तस बते हो॥
धौ ह तेथा इ तो अन्न जपा वे॥ थाइ न होत नन कौ न करावे॥ वा
इ पित कफ देही माहो॥ भोजन सकल बदै रस माही॥ को
उ रस जिह नाह सुभाई॥ वा कै बाइ रोग बढाई॥ भोजन र
स गुन जाने कोई॥ निरधट इह रीत कंठ जिह कोई॥ थोडो औ
ध पाह कल माहो॥ विद्या पड हकि धन कोनाई॥ कुम सर म
ध्यागे हि जपीउ॥ तिह ग्रंथ पर हक ग्रंथ भन कीउ॥ जेते भो
जन जग मै आहो॥ गुण अवगुण रहे पलखे तिह माही॥ वौ ह पे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बीजु सहं सस्कृत बाणी ॥ बिन ब्याकर्न पडे को जाणी ॥
४ ॥ दो० ॥ ब्रह्म चतन ब्रह्म बनासी पुर्ब ग्गुन सर गुन ग्राह ॥ गु
र नानक होइ उधरे पाकालीकल माह ॥ ५ ॥ चौ० ॥ गु
र नानक ई क रूप बनाये ॥ तेग बहादुर नाउ धराये ॥ जे
को इसन गुरु को पाई ॥ सोग सो गुनता तु को जाई ॥ ६ ॥ चौ० ॥
एक बार नाम जिह लीनो ॥ रवि सुत त्रास बाहु हीनो ॥ म न ह
न बच क्रम जो ति ह गुन गावै ॥ लख चौरासी जनम न पा
वै ॥ ७ ॥ चौ० ॥ तेग बहादुर गुर सब नाही ॥ देखै दीन दयाम
न ग्राई ॥ संस्कृ भट सेवै बुलाये ॥ बट ब्याकरणी पंडित
आये ॥ ८ ॥ चौ० ॥ जो ग्रंथ पढे मस मेक री पा ॥ कै मकन हल

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नामत्रुधरीषो॥ ताके भाषा ग्रंथ लिषायो॥ ताकी नकल
चहुं दिस जाइ॥ ९॥ दो॰॥ सहर खजीनाबाद इक चैंहभ
गतठ आह॥ ज्यानी षंड तहर सषट सकल वसै ति
हमाह॥ १०॥ दो॰॥ सब देउ नाम छुट्टी आहे॥ सिलीज्ञा
तताहकीकहै॥ लाडमल को बेटा आह॥ गुरगोइसन
कीनो ताह॥ ११॥ दो॰॥ कहु इक दिन गुर इसन कीयो॥
महामाया तासै वौह दीयो॥ तब वाकै मन ऐसी आई॥
भाषा मै लेवों उलटाइ॥ १२॥ दो॰॥ छेमकरन नृहल ग्रंथ
भजन बीनो॥ भाषा माह ताह कों कीनो॥ जे को पडै का मसि
ह स्रावै॥ औ जन गंधषा इस सब पावै॥ १३॥ दो॰॥ जाइ व

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ऊंधन बौ हत्तो पाई ॥ नर पत भोग कै रैक लिष्याई ॥ कै धन
वंत धुन फल पाई ॥ नाना विध के भोजन षाई ॥ १४ ॥ दो ॥
जेकि कुमल हेपइ इन माही ॥ कीजै किमा हेघ ककु नाही
दृष्टमान है सगल भूलाया ॥ बौह भ्रमल जिन रचन र
चाया ॥ १५ ॥ दो ॥ कैमक तू हल मैकही सो भा भाषो त्तेह ॥
हे देवी जगमात तू कृपा कीजै मोह ॥ १६ ॥ चौ ॥ जिह घर
माह रसोई कीजै ॥ ताको दुष्ट्रा रातन हार धीजै ॥ पर्व कै ग्रर
हलणमाह ॥ ताको हुर रवबत्ति हठांह ॥ १७ ॥ चौ ॥ जो हि
जनु मरीकु दैर मेउ ॥ पर्व दिस मुष ताको होई ॥ १८ ॥ दो ॥
माटीवा सनमे रिंधे कडकी लोह फिराह ॥ नेत्रम वेसीयो

गतिह भोजन षावै जाइ ॥ १९ ॥ दो॰ ॥ भांडे भर्तनु माह पका
इ ॥ वुधवधे जो भोजन षाइ ॥ तो वे वासन माह पकावै ॥
पित्त वधे जो भोजन षावे ॥ २० ॥ दो॰ ॥ जे तिह पमाह षटा
इ पावै ॥ मधवं हताकी होइ जावै ॥ सो नेरू पे वासन माही
लेह पकाइ कै उजे वाही ॥ २१ ॥ दो॰ ॥ सम होइ षनकों दू
र कराई ॥ वुधवधे ताकी सगुण भाई ॥ २२ ॥ दो॰ ॥ वासन
चोडे होइ जिह ॥ रैषे भ्रर उलटाइ ॥ राषै वासन जैत्रार
मै ॥ ताकों भेद सुनाइ ॥ २३ ॥ दो॰ ॥ जिह वासन भात प
काइ ॥ ताहु मै राषो तुम भाइ ॥ लोहे काष्ठि जो वासन माह
धी उराषी उ तुम तिह माह ॥ २४ ॥ दो॰ ॥ मास पका षो॰

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लासकुन ॥ राखकउहै माह ॥ सोनै रुपे लोह के बासन मा
हरषाह ॥ २५ ॥ चौ ॥ छै प्रकार समाग जो आह ॥ ताको राख
काठडे माही ॥ कांसी भांडे धूर पकवान ॥ सगल रोग की हो
वेहान ॥ २६ ॥ चौ ॥ जेको लेवै खीर पकाई ॥ माटी काठ बास
न हवाई ॥ पानी दूध की छाछ बनावै ॥ माटी से नै बासन पा
वै ॥ २७ ॥ चौ ॥ कै जूठ उके बासन माहि ॥ कै पाथर मो राखै ता
ही ॥ जे विधकी कै उही ॥ सासुवढै अवर देखन होही ॥ २८ ॥
चौ ॥ जे भाजी को बस्त अनाइ ॥ दीजै तिह दासी सुख पाई ॥
ताकी कहै वोह जन चित लाइ ॥ बकम कआगर सोई पाई
२९ ॥ चौ ॥ सकी लकडी हाथ समान ॥ डाल रसोई माहि

सुजान॥ कहुज्ञान लीअरसं निश्वास॥ राषकडहीलो
हे पास॥ २॥ चौ०॥ उबलीक डछीछु रीमंगाइ॥ चौषुटे
वोलेसीबअप्रमाइ॥ टैलै राषरसोई माह॥ उनवेरा कि
तमंगानजाहि॥ ३१॥ अथ विषकी परीछा॥ चौ०॥ ह
नेहुंसतोताजुवकोर॥ कुकड निवलजुबांहमोर॥ अर
कुलंग विसके अन्न षाइ॥ औसे होहिन होहि तिहमाहि॥ अ
चौ॥ हर्न अन्न जै विषका षाइ॥ ताके नैन नीर ढराइ॥
विषको अन्न हंसजे षावे॥ चाल अपनी तिसे भुलावै॥
३२॥ चौ०॥ जेचकोर अन्न विसको षाइ॥ देषे नाहि अ
पमहजाइ॥ जेतोतात्रअन्न विसको षाइ॥ ताहवाजके

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

परखिडज्जाई ॥ ३४ ॥ दो० ॥ उडे नतो ता जिह बिख खाई ॥ खा
डी इह ही परीख्या भाई ॥ जे कुलेगा बिस का अंन खावे ॥ उचासो
रकुंरन सख्यावै ॥ ३५ ॥ दो० ॥ जे वा द्रु बिस का अंन खाई ॥ जी
वे ना हनु तम रज्जाई ॥ बिख को अंन मो रज्जो बाई ॥ मो न र
है बैले किछु नाही ॥ ३६ ॥ दो० ॥ बिख को अंन निबल जे खा
ई ॥ ना चत फिर तन छिन क टकाई ॥ ३७ ॥ अथ पनि त अंन
न बिच बिस पवे उस की परीख्या ॥ दो० ॥ जिह अंन ना
ज के बिस खाई ॥ वे हत वेर लागे जु पकाई ॥ जे के बिख मा
न बिच पावे ॥ काला नीला रंग दिखावे ॥ ३८ ॥ दो० ॥ अंन
गन उपरि तेले त उतारो ॥ सीतल हो तै लग त न वारी ॥ जो द

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बेंक
५

ऐसें सोई दूजै विषै जालै ॥ मोरस मान सा सति ह चालै ॥ दूहे ॥
ज्ञ घर सोई दीप दीसा ॥ चौ० ॥ कुछ कछु का कुछ छु वै ह श्रा
घस्तु नावै ॥ तुई रंग म छि कुन आवै ॥ जे बस वोई ताह
सिंघाई ॥ ताको वासु न आवे कवहूं राई ॥ ५० ॥ चौ० ॥ कु
डी माह जे को विसु पाई ॥ गा अहेइ स्तु क फुन जाई ॥ तर
का थी विस पावे कोइ ॥ रंग ताह को काला होइ ॥ ५१ ॥
चौ० ॥ जाह रसोई श्रहै वनाई ॥ जो पहले विससाल
न मै पाई ॥ जे है वैठ सकी पड छाई ॥ व हताकों म जेन
ले ॥ ५२ ॥ चौ० ॥ जे विष छाह माह को पाई ॥ स्याम रंग ता
ह हो इ जाई ॥ जे विस के घृत माह मिलाइ ॥ पानी जैसा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

छूतहोइजाइ॥४३॥दो०॥जे जे गलत तरकारी माहीं॥वि
सडालै कुछ स्वाद न ताही॥४४॥दो०॥दूध दही मे विस
पडै नील रंग तिह जान॥रंग जाहके कुमल समकै श्रे
व पात समान॥४५॥दो०॥जे विस ठाले मठे माह॥पु
गीगल सरवेख पराइ॥सहत माह विस डालै कोइ॥जे
है रंग ताहू के होइ॥४६॥दो०॥तेल माह विस देवे डले
रंग ताहके होवे लाल॥श्रेव ज्ञाद जे ते फल ल्याही॥जे
डले विषको तिह माही॥४७॥दो०॥काचे माह पडे प
क जाई॥पाके माह पडे फुट जाई॥जे रस वाले फल
मे पाई॥तब बाकी रस सगल सुकाई॥४८॥दो०॥जे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वै०क
६

सकेफलमेविसपाइ॥तबबाहुफलमैरसपाइ॥फूल
मालमैजेविसपाई॥वासुजाइकुमलीकुमलाई॥४९
दो०॥जेकापडसौंविषकोलाई॥चक्रपडेकालाहो
रजाइ॥५०॥दो०॥सुनेरुपेकाठकीरत्नमेतीमूनमाल
रंगाकियैइनहूकोजोप्रामैविसडाल॥५१॥दो०॥जेकोइवि
सदेवेभाई॥कियेश्रावश्ररमुबसुकाई॥गिडगिडपडे
मुगधहोइजावे॥लेइउवासीबहुतडरावे॥५२॥दो०॥
वोहथ्रसेउहोइतिहदेह॥विषदेवेतिसलहुदायमेह
जाहश्रनमैविसपजइ॥जेतिसउपश्रमपचडाई॥५३
दो०॥श्रापसहीतेश्रागजलावे॥नीलाधुंमावास

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जन आवै ॥ वाल रै लग माथी मैरै ॥ लागे काग मो न क
त कै रै ॥ ५४ ॥ दो० ॥ कै भ पत कै धनवती या छै वै द स मी
प ॥ विना वैद किस और की ना हक रै प्रतीत ॥ ५५ ॥ दो० ॥
औ सो वैद भ पती या छै ॥ वैद क सास्त्र सगलै भावै ॥ उकत
जुगत उह वै हत मिलाइ ॥ क्रियावान संपूरन सम भाइ ॥ ५६
दो० ॥ क्रोध कर्कसी कपट गुमानी ॥ मोड लोभ अ आलसी
न अज्ञानी ॥ त्रितंई द्रोघर भी मतवान ॥ दयाल कुलीन सु
पापन ज्ञान ॥ ५७ ॥ दो० ॥ सुजान भगत माने पुकारे ॥ व
भकी भे अलग हस भ प्यारे ॥ बुधवान कुछ अम मल लेन
पावै ॥ रहे हजूर न कित हूं जावै ॥ ५८ ॥ अथ भोजन कर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वै॰क
७

रसमें पानी पीवे की विधि ॥ चौ॰ ॥ पेहले पेहर बीच कोषा
द ॥ ताहर हे रस सुनरे भाई ॥ पेहर दूसरे भोजन कीजे ॥ तू
उपरंत खाए जल लीजे ॥ ५८ ॥ चौ॰ ॥ जेती भ बहोइ सो पावे
रोग ताह कै निकट न आवे ॥ बोहत भखजे थोडा षाइ ॥ व
ले अरते जु ताह को जाइ ॥ ५९ ॥ चौ॰ ॥ बोहत खाइ तो रोग ब
ढाइ ॥ भखा होइ अन्न जु न खाइ ॥ ताकी भख मंद होइ जाइ ॥
जे वाहे को अन्न न पचाइ ॥ थोडा थोडा जल पीवाइ ॥ ६० ॥ ~
चौ॰ ॥ पी वहु रोटी फिर रोटी खाह ॥ दुर्बल देहमें दत्र
गनाह ॥ ६१ ॥ स्यान करो पीजु जल पीवे ॥ भ घवोहत ताहु के षी
वे ॥ ६२ ॥ चौ॰ ॥ रोटी पीछे जल पीआइ ॥ मोटा होइ कफ

अधकाइ। बौहत प्यास होइ है जाह ॥ ६३ ॥ चौ० ॥ पेहले भो
जनन दी जैताह ॥ बौहत भषत न होइ जाह ॥ पेहले नी
रन ही जैताह ॥ होइ प्यास भोजन षाइ ॥ ६४ ॥ चौ० ॥ ता
को गोला रोग वढाइ ॥ भषा होवे पीवे नीर ॥ ताह जलो
द्र होवे वीर ॥ गर्भ अन्न जे षावे कोइ ॥ पानी बौहत छीन
बल होइ ॥ ६५ ॥ अथ भोजन की विध ॥ चौ० ॥ सुकासी
तल अन्न जु षाइ ॥ पचे न ही पाले दुष पाइ ॥ भीडा वे ठार से
इ नाह ॥ कबहूं भोजन कीजे नाह ॥ ६६ ॥ चौ० ॥ दिन का
भषा जो निस षाइ ॥ रहे अजीर्ण रोग वढाइ ॥ ६७ ॥ दो०
कुलफा साग विलिष्या वेले मीनो कहे मद्द जाइ ॥ इन कै सं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गरला स्वै दुधनद कवहूं बाइ ॥ ६ ॥ दोहा ॥ तिलदे लेजे भीरस
सलूणे दही इसरमास ॥ देह तोवसत घाइ जोह दुध पीपाइन ता
स ॥ ६ ॥ दोहा ॥ घीउ भात अरकणा छुकै को कबहू मिलाइ न खा
इ ॥ मास कलेंगन दूजे मेघा वेह ही मिलाइ ॥ ७ ॥ दोहा ॥ म
दसों मास कुलंगन खाई ॥ घीउ रहीन खाइ जु मद पीअ सखाई ॥
तितर मोर लवा जु वटेराई ॥ तेल नी रक्त्र रडाल बटई
७ ॥ दोहा ॥ घी के घृत माहत लाई ॥ घीउ तेल न ही घटिपा
ई ॥ घीउ सहस समदेहे नो भाइ ॥ दन रेहे लोक कवहूं न खाइ ॥
७ ॥ अथ पथ्य अपथ्य जाइत नी पोत्ता लोकै ॥ दोहा ॥ गर्भि
कै जल न तेन्हाइ ॥ दूध पी वेहू घर खाइ ॥ भागक

जोतरणीनाय॥ बीजैवधेहोइवलकाय॥७३॥ चौ०॥ मो
जेनकर्कैसोवेकोइ॥ ताहग्रैधमतकोउरहोइ॥ अजाचा
वकाचाकरहोइ॥ ताहकहेजोकरैरसोइ॥७४॥ चौ०॥ मा
सुकाहोवेअधकारी॥ स्वामीकाफुनआज्ञाकारी॥ फुनवो
ह आछीकरैरसोई॥ वैहहोइताकैवसहोई॥७५॥ चौ०॥ जो
गुणहोइरसोईवेमाह॥ तेसभसेवुकदीजैताह॥ करहैदसे
गाचतुररसोई॥ भोजनराधेजिहरततहोइ॥७६॥ अथ
रतनकर्नं॥ दो०॥ माधकगुणवैष्णवजेतहाइवेतदे
मास॥ उआसुगणहैवाइजोउसमछीनवलवास॥७७॥ दो०॥
साउणभाहैसग्रसजेपेहकातकमगमाह॥ हतणाइ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ए मासहि उरमचीकणोइकह॥२२॥ सूचहिमरतकावनिनं
दो॰॥ मघरकेहदैहतहैवाई॥ हरडसंठसोंयातेवाई॥ ते
लकलेजेतेलकठाई॥ मदिनकरेआगसकाई॥२४॥ दो॰
तर्ननत्रीयासोंमागकरीजै॥ वसमीनेकापडवहरीजै॥ उ
प्रउडेलेफतलाई॥ घरमेराबेग्रमधुपाई॥२८॥ दो॰॥
कोडानीकुनगर्मवटाई॥ दहीमाहघृतगनेबाई॥ दो
टीकणकसलूणाबाई॥ तिलबावेरेजमिटाई॥२०॥
दो॰॥ बीवलदहीमिलाइनबाइ॥ मासहहीपकाइन
बाइ॥२१॥ दो॰॥ माघकगुराह्नाहिनवआइ॥ पीपल
संगहरडकौंखाइ॥ पानैकंदसोभोखाइ॥ घावेसरणि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

[illegible]

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वै क
२१

इ खांइ नींवे बैठे जाइ ॥ चंदन घसकै अंग लगाइ ॥ कमल सु
र फूल माला पाइ ॥ सीतल करकै भोजन खाइ ॥ ९७ ॥ वै॰ ॥
सीतल चीकण मीठा खावे ॥ सर्बत पीवे वौहत सुख पा
वे ॥ भोम सैंणकु फूल मिलाइ ॥ सीतल जल पीवै ति बजा
इ ॥ ९८ ॥ वै॰ ॥ कौडा तीखु न जमै कखाइ ॥ इन हन खाइ न म
द पीऊआइ ॥ वौहत न चलै लेल गत है घाम ॥ वैठ रहे को जेवि
सराम ॥ ९९ ॥ अथ वर्षा रितु वर्ननं ॥ वै॰ ॥ सावण भा
दैं मास जु आहि ॥ जल विकार है वैति हमाहि ॥ संधा लौण
हरडै सौं खाइ ॥ ऊचे मंदर वैठे जाइ ॥ १०० ॥ वै॰ ॥ मास ची
कण लौण वटाइ ॥ चावल कणक लौण सौं खाइ ॥ सरके दाम
२

काचड अंग्र गहुं ढावे ॥ पंचकोल का डे पीवावे ॥ ४२ ॥ चौ० ॥
नहीं ताल जल पान न कीजै ॥ सोइन दिन को ध्यान न दी
जै ॥ बौहु खेद जे कर्थनको ॥ ताकी देहि योग न होइ ॥ ४३ ॥
अथ सरद रितवर्ननं ॥ चौ० ॥ अम्र कतक पित अधका
ग्रा ॥ खाइ हरड को खंड मिलाइ ॥ चंचप्र कसो लामी ठाम्रा
ह ॥ सीतल चावल मंग मृकाइ ॥ ४४ ॥ चौ० ॥ खावे दुध
मिठाइ पाइ ॥ गंगनी श्रो षंपं डे लगावै ॥ मास जंग लेपं
छी को लेइ ॥ नदी ताल मै न्हावे नाही ॥ ४५ ॥ चौ० ॥ देही
तैल चिवरप रान कहो ॥ खावे न तील तगर टाई ॥ सोइन
दिन अरनाह जलाई ॥ ४६ ॥ दिन चर्या ॥ चौ० ॥ चार
घडी जब रैन बिहाइ ॥ तब उठि फिर जंगल जाइ ॥ हाथ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वै॰क
११

मरुधोइखंधाकीजै॥ तातण विरख अग्र फलकी दीजै॥ ९६॥ चौ
पनी अत्र तण के प्रवाण॥ वा रह अंग्र गुल दातण आण॥ ह्रे
अरस दूकों दूवै सकों देह॥ दातण चार नार कों लेह॥ ९७॥
चौ॰॥ पर्व उत्तर दिस माह॥ मुह कर बैठ दातण कराइ
ताहि वार हकुरली कीजै॥ सीतल जल सों मुख धोइ दीजै॥
९८॥ चौ॰॥ आगे हे इ चडे दिन राइ॥ भले वैद की छाब
घबाइ॥ ताके पाछे बाइ पान॥ होइ रोग नेर हकी हान॥ ९९॥
चौ॰॥ फुन वाम्रास भगे ग्रगल जावै॥ देह नाही प्रीते ढल
जावै॥ वट लोहू अरु धात वधाइ॥ खंडू मोट होइ कफ।
जाइ॥ १००॥ चौ॰॥ जै सो ताता नीर सुहाइ॥ जै से ताते पानी
न्हाइ॥ सिर ऊपरी छबवाल जु आह॥ ताते नीर न पावे ता

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हि ॥ १०१ ॥ चौ० ॥ आनन अरु बरणि तु औ देह ॥ गरमी मैं कापु
ड नरलेहु ॥ उजल कपडा सावण लीजै ॥ ऐसमी सिआ
ले माह लीजै ॥ १०२ ॥ चौ० ॥ होइ अरुकं नव है जषु कदै ॥ दे
ग सोग वौह सगला हरै ॥ कस्तूरी फुलसी सरबा ह ॥ फू
ल चंबेली आबल गाइ ॥ १०३ ॥ चौ० ॥ दाह मिटे इन फूल
अनाइ ॥ नार भोग की जुगन बताइ ॥ अरु सम बेतुई ससा घकु
आर ॥ भोग करे दिन बीचे नार ॥ १०४ ॥ चौ० ॥ जेठ हाड सा
उण मा हैं ॥ ईक मास मै भोग करै है ॥ मघ रक गुण
वे हम जु माह ॥ तिसा दिन भोग करे दोइ रनाह ॥ १०५ ॥ चौ० ॥
वा वेक रव टस वे वैर होइ भोजन कीजै ॥ चित मैं नै छैवा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रववतत्रैदिसाफवीजे॥ दौहतमोगेनाचष्णीनघोरीति
हलावे॥ कोंमविगाडेकोंमकांमनीतननकेंषावे॥१६॥
दो०॥ इहविधजेनिसदिनरहेहोएजुजतनवताइ॥
भोगकरेसोवर्षातनकहूषनकवहुंपाइ॥१७॥ अथभो
जनकीविधा॥ दो०॥ जेकोभोजनषावषात्र्याइ॥ करइ
स्नानसुगंधलगाइ॥ आसनवैठेहेरवहुवाइ॥ दर्इदिस
मधताहकमाइ॥१८॥ दो०॥ जेसनेकेवासनषाइ॥
सकलदोषताकेमिटजाइ॥ जेरुपेथालीमोषाइ॥ ते
नरोगतानुकोजाइ॥१९॥ दो०॥ जेकासीथालीमोषा
इ॥ सोवकहेत्र्ररमवलगाइ॥ जेपलासपाततमेषा
इ॥ धंनहोइताकोमनभाइ॥२०॥ दो०॥ मधरकगुण

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वो हजु नाह॥ लो न्हाधित ताल जु लताह॥ चेत विसाष जेठ अ
साड॥ जलवाइ सु हडे पित विहार॥११॥ चौ०॥ सा नु सम
हैं अस कुआर॥ उटा पे ही नीर प्यार॥ वैं जल मेघ के कू
आ आन॥ पी ये तीन दोष की हान॥१२॥ चौ०॥ राखे थाल
हे ठ सिवाइ॥ भात प वो सब स्लस भपाइ॥ विच कटो रे धी
उपवाइ॥ भोजन करके हरगु सगाइ॥१३॥ अथ बाउल
दिन सो की विध॥ चौ०॥ चवल पाणी संग धोवाइ॥ अ
के कीजह नीर कढाइ॥ बुर का लुड वा वल हटीजे॥ ज
व नी अत व ष कढी जे॥१४॥ चौ०॥ उत्र से ष तत्पोज
पाइ॥ थ्यो डी अंग्र चले ह उतराइ॥ भात वाइ तिह अगन व ढ
इ॥ वो हत पिसा व होइ जिह ताइ॥१५॥ चौ०॥ छे ती प वे वे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हत गुण होइ॥ पच्छ इह भावे समको इ॥११६॥ मृगी की हाल
चौ०॥ हाल मृंग वाली सें धोइ॥ ज्ञान कूट धोवह ते हों
इ॥ ताते नीर होइ तव पावे॥ रीझें हींग नीर रघ सलावे॥११७
चौ०॥ जनत्या रहोइ तंभावे॥ कव जकफ त्र रपितघ टा
इ॥ स्वाद भला है धातव टावे॥ हल की है गै देख घटावे॥११८
दो०॥ मां ह मां ह हल अरमुंगनी उगुण दे ते जे षाइ॥ व
ल वीर्ज वै ह तेतो करे भारी विक ली च्याह॥१॥ चौ०॥ बै
वन रुप लन की ज्या गज राइ॥ तव चार टवे तां के सीप राइ॥
गल समै पल्ल टे है जमाइ॥ मघ मरतो मेखातक ढाइ॥१२०
चौ०॥ राव ब्याग पूले है कुनाइ॥ कारे समहै है जे केभा इ॥ वा
इ पित जो विष है भाइ॥ पापद लिहु भैनहु बजाइ॥१२१॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ओषधी ३ ॥ दोहा ॥ बुधबुध दौ हती करे मीठा सीतल स्वाद हाती
न देह बढ़िग रोग कुल उद्वेग भी जाइ ॥२२॥ मैसधी ३
दोहा ॥ मीठा सीतल पुष्ट है लोह पित समीर दूर करे दि
ग रोग कुल मैसधी गुण बीर ॥२३॥ बकरी घी ३ ॥ दोहा ॥
बई स्वास जु कास कुन ज्वर सम भैने न विकार ॥ दूर करे बल
होत है कफ करी घृत गुन सार ॥२४॥ पापड़ बणे बणे की वि
धि ॥ चौपई ॥ आटा मंग कि उड़द का चना बे ॥ लोण मिरच जो मा
हिंगु पावे ॥ सजी घी उ...ाह मे पाइ ॥ गो वह पापड़ लेह बना
इ ॥२५॥ चौपई ॥ हल के ह पा लेन च्वतो इ ॥ खंगपावें सो भने
को हा ॥ तले घी उके भावे रुच है ॥ दिजवा के गुण श्रेसे कहे ॥२६॥
ककोड़े की विधि ॥ चौपई ॥ दे है फाक ककोडे कीजै ॥ पाणी पाइ ३

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वै॰क
१८ वालजुलीजै॥सेंधाहलदीलेहलगाइ॥घीउहिंगुकोतुड
कावाइ॥२२॥चौ॰॥जवपाकेकुटपीपलपाइ॥पाचकह
लकेअग्नवढाइ॥वासीमिटेसवेसीजाइ॥पेटमाहकीडा
नरहाइ॥२४॥ताहसी॥चौ॰॥मासवकराटकडेकीजै॥
हडीहाडनीरधोईजै॥ताहउवालेपाणीपाइ॥केसरलू
णडालपकाइ॥२६॥चौ॰॥उसपाणीमेमासनिकारे॥
चावलरींधेजुहेनिम्रावे॥जववावलडडरहेइजाइ॥
ताकेलीजैनीरकढाइ॥२३॥चौ॰॥तामेरसामासका
पावे॥मासडालकेताहपकावे॥जवचावलकारसमुक
जाइ॥मासमिसालेदेहमिलाइ॥२५॥चौ॰॥वाइसलू
णासेंधापाइ॥मीठेमिश्रीघृतसोंवाइ॥डालेहाथसेउकै

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तामे॥ भीमसेण कफवद्धन तामे॥ १३२॥ दो०॥ कस्तूरी लैं
गइला चीहनो॥ डालै औरु जि हम न मानो॥ जव त्यार है
इ तव खाइ॥ देइ घटाइ पित अरु वाइ॥ १३३॥ दो०॥ वुष्क
ते अरु घात वढावे॥ गुर्ची है वलवान पचावे॥ १३४॥ चि
चडी॥ दो०॥ सठीके चावल लै आउ॥ ताते अधी द्दन मि
लाइ॥ धोइ डाल वलटो हो माहि॥ पाणी लोण डाली पै ताहि॥
१३५॥ दो०॥ जव त्यार होइ तां खावे॥ अरु कफ पावे हीं उलगा
वे॥ सिआले मो खिचडी खाइ॥ है भारी अरु वाविनसे वाइ॥ १३६
दो०॥ वुष्क करे वल अरु धक वढावे॥ कफ जु पित मल को
उपजावे॥ १३७॥ कचरी आकी तरह॥ दो०॥ फल जो का
टेक चरीकी जे॥ रस निंवू अरु लोण मरती जे॥ सके जव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वै॰क
१५

घृत सैं तल खाइ॥ गर्भ है है न च पित वढाइ॥१३९॥ मूली की तरह

दोहा॥ मूली बीज रहे लूण मिलाइ॥ ले हनि चोड मल होह च

लाइ॥ पीउ हींगु कै तुड का पावै॥ पीउ रहे निं बूनि वठावै॥

१४०॥ दोहा॥ खावे न वग्र रभ व व धाइ॥ दूर कै वै पीन स अ

रवाइ॥१४०॥ अर्क की विधि॥ दोहा॥ प्रातह सैं धाअ दूक पा

इ॥ जीभ कं ठ सुध होइ भाइ॥ अंगु गु री अदकु लै पावै॥ बीरो

लूण विसार मिलावै॥१४१॥ दोहा॥ पीउ हिंगु का तुड का पा

इ॥ जीरा पाद ले हव का॥ जबहे बे तुड का पकना इ॥ नव

अर्क लीजै कम का इ॥१४२॥ दोहा॥ थोडा डेहा का ...ीका

इ॥ पीउ रहे सम नीर सु का इ॥ ले ह उता र खा हदे भाई॥

सम गुण हेहे तो हे सम जाइ॥१४३॥ हो व तरह॥ दोहा॥ अ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

इक कुंनी का दीनाई ॥ लूण मिरच वंजे भीरी पाई ॥ का वे षा
वे अबव धावे ॥ ञ्ञ नप वेक लपितव धावे ॥ १५४ ॥ चौ० ॥ जे
को षाइ सिञ्ञा लेमा ह ॥ नव मे ते गुण होवे ता ह ॥ १५५ ॥ ह
रसे की विधि ॥ चौ० ॥ चीर मास हडीनु निकाल ॥ खब्बे र
एक मास समस डल ॥ देने बिबवुल टोली डले ॥ जले दे
पेड तने जे गाहे ॥ १५६ ॥ चौ० ॥ लौंग जुवती मिरचां ञ्ञ
मंडू ॥ सेंधा लूण इला वीपा इ ॥ जे वस्स के पा छे घ तवा इ
जो वाहू के माह समाइ ॥ १५७ ॥ चौ० ॥ पाइ मसा ले षाइ जु
भारी ॥ सीत निवारे है वतन का री ॥ १५८ ॥ कुसार वणउ
ले की विधि ॥ चौ० ॥ हेइ दरी ॥ हिंगु ञ्ञ नाइ ॥ रती ञ्ञा ठ र
सञ्ञ इक पाइ ॥ मरचां मासे चार ञ्ञ णा दे ॥ सो लह मासे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जीरापावै ॥ १४८ ॥ चौ० ॥ हलधी तोले पंच क्रनाइ ॥ धनीया
तोले बीह मिलाइ ॥ इह चूरन सभ रोग सम केइ ॥ जेता चाहे
ते ता होइ ॥ १४९ ॥ चौ० ॥ कचूक ठौर रले होवी साइ ॥ छाछ
राब माल लै मै पाइ ॥ बलटो हो मेथी उपकाइ ॥ पुन हो
बुसार नी रवि विच पाइ ॥ १५० ॥ चौ० ॥ जब घी उबु सार उ
कत हे इ जाइ ॥ मास पकाइ लेह उतराइ ॥ इसी भांत तंतु पा
इ घटाइ ॥ घी उडा लीपे गर्भ कराइ ॥ १५१ ॥ चौ० ॥ फुल क्र
नार का लै डाल ॥ धोडि जे हो छाछ उघाल ॥ धोडा जे हाले
हो पकाइ ॥ लेह छाण सालण मै पाइ ॥ १५२ ॥ चौ० ॥ दह
छाछ ते घी पकडाइ ॥ लेह उतार जु चूर्न पाइ ॥ काइ ले
हो चूर्न वी साइ ॥ लौंग इलाची दाना ज्ञान ॥ जवती हल

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चौनीसमान॥१५४॥मासककौंकी विध॥चौ०॥मास
अग्नउप्रचडावै॥तातोहोइहिंगुकुनपावै॥तुडकपावै
मासामिलाइ॥ आधासीऊतवइहपाइ॥१५५॥चौ०॥आ
नछाछतातूमैगल॥कैअनारहालैरसुडाल॥पुबततहोइ
ताकोउतरावै॥चूर्नपाइताहिकोंघावै॥१५६॥चौ०॥जाको
मासलालकीचाह॥रक्तवंदनघसजलपाइ॥जेकेअ
पानीसौंपाइ॥जवरहंगताकेहोइजाइ॥१५७॥चौ०॥जु
हइसकेघसतूलमेंपाइ॥ताबअग्नसकछिनकउत
राइ॥मासपैईसेवीसखूनावै॥तापैईसेघतमिलावै॥
१५८॥चौ०॥सेकपैईसालोमामिलाइ॥हमडीसातबुसा
रजुपाइ॥सेकपईसाचूर्नपाई॥जोपाछेकसोमसमजाई

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वै०क
१७

१५८॥ चौ०॥ सकल मास जो है तरकारी । विध है सेक लेहो वि-
चारी ॥ आगे जिह जैसी पक्व होइ ॥ पाक मसाले तैसो कीजै ॥
१६०॥ चौ०॥ जो होइ मुआफक वस्त देस मो ॥ आन पकाइ
खाइ वस्त सोइ ॥ १६१॥ हलवां नवकरे की विधा ॥ चौ०॥
घीउ हिंगु कौ तुडका पाउ ॥ मास पाइ कै लेह पकाइ ॥ लाइ
चौलैंग मरच सैंठ पाइ ॥ स्वाद मूलो है ज्यैको खाइ ॥ १६२॥
चौ०॥ अगन वधे बल है वेताह ॥ छेती पचे रुठ कुछ नाह
१६३॥ बकरी के मास की विधा ॥ दो०॥ पकै हिंगु कट
तेल में पावै चून पाइ ॥ अगन तता कै वह घी पीन सरो रोग
मिटाइ ॥ १६४॥ उश्नान वकरे का मास ॥ चौ०॥ घीउ हिं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गुंडेकोतुडकापावे॥ मासपकावेलूण मिलावे॥ वाचूर्न
कौंडालेखाय॥ पीनसम्रर्शमिटेविनजाइ॥९४॥ अरसी
वकरेकीविध॥ चौ०॥ घीउ हिंगुलौंगकातुडकापाइ॥
मासपाइकैलेहेपकाइ॥ नेकौंपाइखवूनेपाइ॥ मीमहै ८४
वाइपिनजाइ॥९५॥ हुंवेमेंढेकामास॥ चौ०॥ कौडेमेल
महि हिंगुडालै॥ तुडकापाकेमासफुनडाले॥ पाछेलू
णपानरसपाइ॥ भावीनहेमिटावेवाइ॥९६॥ चौ०॥
जेहुंवेपिछेकेले [illegible] रकमाड॥ [illegible] विनताहवठ
जाइ॥९७॥ हरणीकामास॥ चौ०॥ मासकाटकेटुक
डेकीजे॥ घीउडालकेतन[illegible]तलीजे॥ वलठोहिसौंलेहे
कढाइ॥ सेठमरचहिंगुपीपलपाइ॥९८॥ सेंधाइही

मिलावकु ताह॥ फिर लैपकाइ वलटे हैमाह॥ लीजे पा
णीजगलपकाइ॥ पीजे बावे चून ने पाइ॥११०॥ वै०॥ सीतल
हैलोकु विकार॥ स्वासकाससंनिपातविहार॥१११॥ हर
णकामास॥ वै०॥ मासकाटजलमो अवटावे॥ काढ औ
रवासनमोपावे॥ कौडे तेलहिंगतुडकाइ॥ मासपका
इलैसैंधापाइ॥११२॥ वै०॥ रसमम नार हाणेक ढाइ॥ म्रा
इकपाइताहकेवाइ॥ वंधकुहैत्रिहेवमिटाइ॥ हरमा
वेतावुर भीजाइ॥११३॥ सहेकामास॥ वै०॥ घीउहिंगउ
कातुडकापाइ॥ लौणडालकेताहपकाइ॥ चूर्नडालघा
इकंपजाइ॥ सीतलमी छंसंनिपातमिटाइ॥११४॥ पाडे
कामास॥ वै०॥ वौहतघृतमैहिंगु॥ मिलाइ॥ तुडकापा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

के मासन्नु पाइ॥ चोडीठौ रस्त्र गनजु लाइ॥ लोनडालके
लेहि पकाइ॥२५॥ चौ०॥ श्राद्द कलौंगनु वज़ौपाइ॥ तु
इ फल पाइ मास सकैंबाइ॥ हैवलतवंतवधावैघात॥ सी
तल स्रहै घटावै बात॥२६॥ वाहसिंगे का मास॥ चौ०॥
काट मास घ तमाह पकाइवे॥ श्रायो री केतवउतरा
इवे॥ काट मास को राखन्मारे॥ बौहत घीउ मे हिंगुजु
जरै॥२७॥ चौ०॥ सैंधाहलहीडालपकाइ॥ जु कोघावे
चूनपाइ॰ धुहकरैवतहिवेलाह॥ पाचकहै कैतीपच
जाह॥२८॥ तितर के मास की विधि॥ चौ०॥ काले तिल कूते
लले घ्रोउ॥ हिंगुपाइ केताह पकावै॥ सैंधाहलदी लून
पाइ॥ जवपाकै लीजै उतराइ॥२९॥ चौ०॥ सुठमरचपी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वै० क
१९

पलपीसाइ॥ बौहचूनेडालेकिरखाइ॥ सीतलचीकणहै
ककजाइ॥ एकेरसमीठगुणयाह॥१८०॥ वै०॥ लोहूपित
विकारमिटाइ॥१८१॥ मूरकेमासकीविध॥ वै०॥ सारा
सरखाणएभाई॥ जातेपाणीसेंघोम्राई॥ काचांकीतुम्रा
गजलाई॥ ताकेवालत्लेहेजसलाई॥१८२॥ वै०॥ जववाके
समवलजलाहे॥ उपमैताकोभुरचाहे॥ अंग्रगअंग्रगति
हकाटवनावे॥ पाहेकीविधनाहपकावे॥१८३॥ वै०॥
चूनेपाइखाइबलहोइ॥ वाडहोबहुरहेवेखोइ॥१८४
वै०॥ वडेवडेटकडेतिहकीजे॥ जलमेपाइमासधोईजे॥
तांतेधीउमाहतिहपाइ॥ पाकेजलेलूणबटाई॥
१८५॥ वै०॥ मासनिकालकपडेमेपाइ॥ हूजेवासनमा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हकुणाई॥ पीउ हिंगु किरतुडकादेह॥ बाइलास होवी
गुण सेह॥१७॥ चौ॰॥ मडणामासलागेजवभाइ॥ तव
रसअ्रनाम्हालेमेपाई॥ कस्तूरी लौंग सेठ अम्र जीरा॥
पाइ लेहो वलटेहीवीया॥१८॥ चौ॰॥ तीन दोअम्र
नावमिटजाइ॥ स्वादमलाहैजेकोपाइ॥१९॥ हीवला
सकीविध॥ दो॰॥ रोघेजीउपाहेकथोफुनपेत्राहिक
पाइ॥ लासभ्रहे संइ रवनेदूरक वेकफवाइ॥२०॥ हो
रलास॥ चौ॰॥ मासऋानकेकीमाकीजै॥ सेधालाइवी
हिंगमलीजै॥ पीठीजीउकरलेहमिलाइ॥२१॥ चौ॰
पाइ बुसार लेहो पकाइ॥ जीउ पाहेकथोपकाइ॥ जो
बाइ पित होइ॥ स्वासकासघटाइ॥२२॥ समोसेकीवि

[illegible]

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बे॰क
२०

घ॥चौ॰॥घनीघ्रा हिंगुनीरमैपाइ॥ लैंगइलाचीलो
भ्ररलाइ॥१८॥कीमाकूरहिंगजीरापाइ॥ लैंगइला
चीलोभ्रमिलाइ॥१८२॥चौ॰॥डलब टाईथीउतपाइ॥
तलेसमोसेताहवनाइ॥घोउतपाइतलाइजुबाइ॥चौ
हतलेइनवक्रमवधाइ॥१८३॥चौ॰॥वाइपितकीहे
वेहान॥सोपावेजिसकीनेहान॥१८४॥कीमेकीला
सरुपेद॥चौ॰॥रोधामासवासभ्रमेपाइ॥वेसभ्रघनी
घ्राहहींग्रनाइ॥हिंगुग्रानकिरहतमहपाइ॥मास
डलकेलेहपकाइ॥१८५॥चौ॰॥सेधासंठकूपरमि
लाइ॥रेकग्रांवरेलेहकूनाइ॥घ्रामेचूनेपाहनमाइ
श्रीरलासमसमहंमेपाइ॥१८६॥सवजलासकीवि

राम
२

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

घा॥ चौ०॥ पाक्कै विध जो कही पकाइ॥ वस्त अरध कमषै तामेया
इ॥ लकडी अरु रंज्या बले जावे॥ हलधी के सर ता मे डारे
१९७॥ चौ०॥ रस अभ्र नार हरणी क ढाई॥ बजन मरु अभ्र काक
मग रेवाई॥ जे रस की तन चाहे लाल॥ रस अभ्र नार हरणि
को डाल॥ १९८॥ चौ०॥ के सर अभ्र रमें जी ठ मिलाइ॥ वाइ वि
त कफ घाते जाइ॥ १९९॥ मास के भुनणे की विध॥ चौ०॥
काट मास जल सों धोआई॥ लोण हली आद कहिंगु पाइ
मास र लाइ सी घसों लाइ॥ भुने अग्र सी मकिराइ॥ २००
चौ०॥ जी उमरा जैती उती उपजत पाई॥ जब वह घोसो टूट
व जाई॥ ले उड जार वै ह ड जो घाइ॥ वाइ घटे अरु रुच
होइ जाइ॥ २०१॥ मास तलणे की विध॥ चौ०॥ मासकाट

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जलमेउटावे॥ जबगलजाइजांनीरनिकाले॥ घीउतपावेता
हितलावे॥ मरचलौंगजवत्रीकावे॥ २०२॥ चौ०॥ इलाइ
चीकपूरमिलाइ॥ लेहोउतारसकजलजाइ॥ जेकोउता
हूकेघाइ॥ मघलगेवलताहिवघाइ॥ २०३॥ जंहूरविच
मासमनलोकीविध॥ चौ०॥ टूकडेकीजैमासअघाइ॥
चीसमसालातकोलाइ॥ सीघवीचचेवनावे॥ इमिघा
वतंहूररवावो॥ २०४॥ चौ०॥ मजेतजाइलेहघतजांके
वेहडकेरहोतुमताको॥ जबमजेतवकाढहोबाइ॥ को
मलवपचत्रहेरचहाइ॥ २०५॥ पटिवाककीतरह॥ चौ०॥
मासकाटकीमाजुकरीजै॥ पाइमसालागोलाकीजे॥ उ
वपातपानलटकाई॥ आटोगूंधजाहलवटाइ॥ २०६

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चौ० ॥ माटीकोफिरलेपकरावे ॥ खपरमाहफिरफिरव
कवावे ॥ लालरंगमाटीहोइजाइ ॥ काढसराइसवौह
कोडाइ ॥ २०८ ॥ चौ० ॥ तलबटाईबाटाहोइ ॥ तातापा
रखघपकगुणहोइ ॥ पचेतुतभघघातवधाइ ॥ पचे
नहीजैसीतलवाइ ॥ २०९ ॥ होवरूकुटलाद ॥ चौ० ॥ बाटी
कलकाहूकोलीजै ॥ ईटीताकोहूरकरीजै ॥ गहेबा
कोकाटखुराई ॥ वेसलमासावुसारश्रमणाइ ॥ २१० ॥
चौ० ॥ करइकठौनोकीमाकीजै ॥ कलकेकींमेसाप
रखीजै ॥ कलजेसघबडडीदेवावे ॥ खाटाजघताहल
पटावै ॥ २११ ॥ चौ० ॥ केरपलेटहोमाटीमाह ॥ डालखा
गारपकावहताह ॥ माटीहोइलालकढाइ ॥ बावह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बै० क
२२

स्वरमिटैमुखजाइ॥२२२॥ मासकेवडेवडीकीविध॥
चौ०॥ कीमाकीजेमासअघात॥ लूणवुसारमसालेला
इ॥ लडुजैसालेतुवनाइ॥ नुडका हिंगुघृतमहपकाइ
॥२२३॥ चौ०॥ ठाढ वुसार तुवडंजेपावे॥ कडछीकेरवे
हुतपकावे॥ धाउमिलेवलवीजेग्राह॥ मिटेवाइचूर्ण
सीवाइ॥२२४॥ चौ०॥ कीमाकुरकेमासकोंकितहीमा
नवनाइ॥ हलकाहैहैतीपवैजोताहुकोंवाइ॥२२५॥
मिलेमासकीतरह॥ चौ०॥ वाणीमासधीउपकाइ॥ दी
जेउपरखगरवडाइ॥ पोडीजेसोसंहीकाइ॥ फिरमिश्री
सरदुधमिलाइ॥२२६॥ चौ०॥ जातेमीठास्वादलगा
इ॥ मिश्रीदुधसकजवजाइ॥ लाचीलौंगकपूरखना

इ॥ २२७॥ बै॰॥ जवतीकस्तूरीडाल॥ चूर्नेकरघोवहकु
नडाल॥ घोडींमेंसीलासरपाइ॥ कोनलपाइवाइपि
तजाइ॥ २२८॥ स्त्री की विध॥ बै॰॥ जलकेस्त्रीस्नाग
त्रिफ्फमाल॥ घुरववालकोंदूरकराइ॥ घोइकाटके
टकडेकीजे॥ घतहिंगलूणवुसारपईमे॥ २॥ बै॰
तेलोनीरघतलेहेपकाइ॥ इलाचीलौंगजवंतीपाइ॥ ला
लचीनीडलेकुनघाइ॥ भारीस्त्रहेविदारैवाइ॥ २२९॥ =
स्वांद की विध॥ बै॰॥ हाठूकीजेगुंहरुनाइ॥ अंतहेदेंसी
घेहिंगुजलपाइ॥ नीकेटुकडेकरैनिकाल॥ घीउव
सारलाइघतडल॥ २३१॥ बै॰॥ स्राठूनलनिंवरस
काइ॥ चूर्नेडलताहकेंपाइ॥ भारीरूचीदिजुउजैं॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

के॰क
२३

बाइ स्लेष्म कै वैाह कवे ॥२२२॥ मास के राइ ते कै विध
चौ० ॥ पत ली कुछ मास मेो पाइ ॥ सीऊ घृत हिंगु माहत
लाइ ॥ भाई लैा णमठे मेो पाइ ॥ बास न लेहे कफर बसा
इ ॥२२३॥ चौ० ॥ मास डालमठे मै बाइ ॥ पित बलक वे
पवेक फ जाइ ॥२२४॥ बैंगण की तरह ॥ चौ० ॥ बैंगण
ली जै बडा अनाइ ॥ डंडी काट लीव भुनाइ ॥ की माकी जे लू
ण लगाइ ॥ मल बुसार बैंगण वि च पाइ ॥२२५॥ चौ० ॥ कै
मे से भरडं डी देह ॥ मुख बैंगण का सीव जु लेह ॥ उब तें ता
के माटलाइ ॥ पाणी सें लीजै उबलाइ ॥२२६॥ चौ० ॥
घृत हिंग नुड के तल मावे ॥ वल पुष्ट करे अरु वाइ घटा
वे ॥२२७॥ पविंद जनावर की तरह ॥ चौ० ॥ पंछी को

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लै अंगाछ कै कीजै ॥ पतली छाछ माहि उबलीजै ॥ जब गल
जाहि तब लै हो कडाहि ॥ लूण अनुसार मरचाहिं गुपाइ ॥ २२७
चौ० ॥ हालवी नीलीं गलाइ चीपाइ ॥ मलै हीं सीधे पर
बाइ ॥ अंगवारं धूलैह भुनाइ ॥ थोडे थोडे घी उतलगाइ
२२८ ॥ जब भज्जै तब खावो भाइ ॥ भागहीन कि तद्र सनम
इ ॥ २२९ ॥ हेरा विधि ॥ चौ० ॥ तरह उबली मास उबाल
जाहि डीलै हो निकाल ॥ पीस मास सिलवटे पाइ ॥ हला
र दी हलवी नी लैंग मिलाइ ॥ २३० ॥ चौ० ॥ रस मिं
चूआदिक अनुसार ॥ सभ मिलाइ पिंनी तुस बार ॥ पिं
नी सी बेसन गल लगावे ॥ तुब से लागा लपटावे ॥ २३१ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा॰क
२५

दो॰॥ मेंनैतिसेअंगश्रारतपाइ॥ घोडोघोडोसीउलगाइ॥
पाकुमहाबलरमकहाइ॥ हलेकहैत्रि देषमिटाइ॥ २२३
दो॰॥ घुघीलवाबटेरकुनश्रौरनुपंछीश्राह॥ घुघीश्र
रकबूतरे॥ सीघनविघ मैकहाइ॥ २२४॥ तितर॥ दो॰॥
जंगफिरैसोतेताकि रपटचलेपमजाइ॥ गुमातीतर
केमाससमोजेकेवाकोषाइ॥ २२५॥ बटेरा॥ दो॰॥ श्रग्र
वघेसीतलश्रहेश्रौरविफबुरजाइ॥ वीजैकुनताको
वघेमाासबटेराषाइ॥ २२६॥ लवा॥ दो॰॥ कवजहै
वैपटतिहश्रर कुनश्रगुवघाइ॥ कफवघेतनता
हिकेमाासलवेजेषाइ॥ २२७॥ घुघी॥ दो॰॥ भारीचिक

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नीसवादहैकबज्रघातवघाउ॥ घृधीरचेकुवातपित
लोहूरोगमिटाइ॥२३८॥ मछीकीतरह॥ चौ०॥ माछी
काटैफिरघोऱ्याउ॥ फिरधोवेवेसमछकाहमिलाउ॥ ह
लदसेठघनीयाकूटुतेल॥ इनसोंमलधोवहुजलमे
ल॥२३९॥ चौ०॥ पाकेमलेवाससभजाइ॥ तनकहिंगु
कुनलेहलगाइ॥ घनीपातजवप्रहिंगुपाइ॥ तेलतपे
तवमछलौपाइ॥२४०॥ चौ०॥ लूणछाछगलपकावे
खबचूर्नसंठथ्रधपकपावे॥ जवपाकेतवलेहउता
र॥ घीउहिंगुकछमिपाइ॥२४१॥ चौ०॥ तुडकालाइ
लेहितवखाइ॥२४२॥ मछीकीलासवृणाउणकीवि
धि॥ चौ०॥ मछीलेकैवासगवाइ॥ घनीपातजप्रहिंगु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पाइ॥ डालजेलमैलेहनुडकाइ॥ लूणवुसारमछीकुनपाइ
२५३॥ चौ०॥ पाणीडाललेहपकाइ॥ नासतरहपाछे
समऊड॥ मछीकापडडालछुनावह॥ लेहोनिचोडके
हडनुमवावह॥२५४॥ मछीकेमासकीवडेवडीप
कौडीकीविध॥ चौ०॥ मछीमासीकीकरेवनाइ॥ पीठ
जीउमिलवपीसाइ॥ कीमाकरकेमासतुलाइ॥ तिस
चौथाइडालबटाइ॥२५५॥ चौ०॥ नलेतेहमेवडे
पकाइ॥ कैंकरपकौडीतांकेंवाइ॥२५६॥ होरविध
चौ०॥ मछीलपेडवालेताह॥ नीरनपावैपावेछाह॥
काटतनपाणीमेंधोइ॥ कांटाकाटेजोकुछहोइ॥२५७
चौ०॥ आदकमरचवेसारषटाइ॥ जीरासेधाहिंगु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रहाइ॥ तिलवटेसों मास पीसाइ॥ बजायकै कोडी वडी
पकाइ॥ तेलकै घृत साथ तलाइ॥ स्वाद भला है जेको
खाइ॥ २४८॥ मछीकेउटपाककीविधि॥ चौ०॥ मछी
लछीकरधोस्वार॥ कांटेकाढि सिलहि पीसाइ॥ जीरा
चावलस्वाटाउर॥ रसमस्व नायरहाले जुा भुसार॥ २४९
चौ०॥ पीसों पिंनी लेहि बनाइ॥ केले पात तेल हि लपटा
इ॥ तिहउपरमाटी लपटाइ॥ अंगपारोसों लेहि पकाइ
२५०॥ चौ०॥ पाके कालामिटी है जाइ॥ लेहि निकाल
बीहडतिहखाइ॥ २५१॥ हिंवमनरहा॥ चौ०॥ माछी लेहि
स्वाछी कटाइ॥ तुडकहिं गुतेलकढ पाइ॥ छिनइक
पाकेसे धापाइ॥ कांटेकाढ लेहि पीसाइ॥ २५२॥ चौ०॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पावेरहीबुसारमिलाइ।। तरहलासकोलेहपकाइ।।
चूनेपेहलेतोडलजोवाइ।। हल्दीहैबावेपितजाइ।।
२५३।। चौ०।। पाचनहैवलअग्रयककवघाइ।। कहेवथ्य
हैजेकोबाइ।। २५४।। चौ०।। पलासीमछीकीविध।। चौ०।।
माछीककैकाटबनावे।। हिंगतेलमैमेलपकावे।।
माछीतलेहिंगबुसार।। लूणअग्रवेलेचूनेडाल।। २५५
चौ०।। पासीसोसोकेवलहोइ।। बावेवाइपितकफखोइ
२५६।। बडीमछीपाठ।। चौ०।। लछिककैकाटअग्रलण
ह।। लाइबुसारतेलहिंगकाइ।। जबपाकेतवमछली
पाइ।। अवचूनेसेंधाअरुनीच।। डालपकाइबाहुरे
वीर।। २५७।। चौ०।। नीरवौहतअग्रखाइमिटावे।। कफ

लोहूविकारखघावै॥२५८॥गंडीमछीकीतरह॥बै०
माछीआनोकाटविसाय॥सिरअरपछदेहतिहठय॥
तेलहिंगुलीजैतुडकाइ॥माछीगलबुसारलगाइ॥२५९
बै०॥लूणबटाईपाइपकाइ॥घटैवाइघातअरुव
घाइ॥२६०॥निकीमछीकीतरह॥दो०॥मछीआछी
तेलतलाहिंगुमसालेपाइ॥गलबटाईजेपकेघातेह
बगैजाइ॥२६१॥समनोमछीआकेगुण॥बै०॥प
वनबलककपितवघावै॥वडेनीरबलवानकहा
वे॥घेडेपाणीकीवलनाही॥मंघरपोहघोहकीका
घाही॥२६२॥बै०॥माघफगुणहैभलीतलाइ॥जेठ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बे॰क
२७

हाउ आछे दुआई ॥ चेत विशाखन ही की आनो ॥ सा व
ण माहिं वही वषानो ॥ २६३ ॥ दो॰ ॥ कैदर आभू वडे
कौ नालो ॥ ताकी नाठी षाहि निकालो ॥ अस कछि कव
उ न लाई ॥ मछी के गुण ही पे वताई ॥ २६४ ॥ छे आं भां
न साग को नरहा ॥ दो॰ ॥ आछु धो वहो चौरस वार ॥
पीउ हिं गुनुड के मोजर ॥ साग पाइ अरु लूण वदाई ॥
पालीं डोले ताहि पकाई ॥ २६५ ॥ दो॰ ॥ हिंग घोली षेनी
रा मिलाइ ॥ साग पके नव वामे पाइ ॥ जेते साग अहे संसा
र ॥ सभनूं की विधि ऐक विचार ॥ २६६ ॥ वैंगण की नर
हा ॥ दो॰ ॥ चार फाक वैंगण की कीजे ॥ डऊ ताके साथ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रषीजै॥ ताहउवालेकंजीपाइ॥ घनीप्राग्नादिकौंल
हमंगाइ॥ २६३॥ चौ॰॥ सैंधालोणमरचपीसावै॥ ह्र
जैबासनपाइधुलावै॥ लेहेउवालजवहीपकजाइ
थोडीजैसीहिंगमिलाइ॥ २६४॥ चौ॰॥ ताकौवेंगण
माहमिलाइ॥ मुचभांडेकौंमुंहपकाई॥ इसविधकै
जौवैंगणखाइ॥ रुचनाहीतिहरुचउपजाइ॥ २६५॥
होरतरह॥ चौ॰॥ वेंगणदेहेहुटककराइ॥ डंडीता
कैसाथरषाइ॥ घीउहिंगनुडकौफिरतले॥ जलसों
घोलखटाईपाले॥ २६६॥ चौ॰॥ मरचांगलेहलधन
काइ॥ सोचकगुणवैहतेजैषाइ॥ २६७॥ होरविध॥
कोटेवैंगणसजवनिहार॥ डंडीराषफांककरवार

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बैं०क
२८

धनीपाञीरा मर्छ बंझनाय ॥ लौंगसठेलद सेंधापाइ ॥ २७२
चौ० ॥ चूनेकी ड़ेफेंकरल्लाइ ॥ सौथवासकी हेहेलाइ ॥
लेहेपुडोई हिंग घततताइ ॥ बैंगणताके लेहे पकाइ ॥
२७३ ॥ चौ० ॥ तुरसी लौंग इलाचीजल ॥ चूनेपाकेक
पीसेंघाल ॥ नचउपडेडोताकेंपाइ ॥ डौमखाहमला
तिहुआइ ॥ २७४ ॥ चौ० ॥ होरनरह ॥ बैंगण टकडे गि
दवणाइ ॥ धनीपाञीरा मंछ म्राणाइ ॥ मर्च लौंग पी
सेजलपाइ ॥ बैंगणडे वेढिनकरपाइ ॥ २७५ ॥ चौ०
वेसणमे फिरलेहड वाइ ॥ मूंमन्तसमघतमाहते
लाई ॥ २७६ ॥ होरविधि ॥ चौ० ॥ बैंगणस्राणहुलेहे
वणाइ ॥ डहफांकफांककरवाय ॥ घीउपकाइहिं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गुमिलाइ॥ सागचूककैवैंगणपाइ॥२७७॥चौ०॥ छाछ
मरचश्चरसेंघापाइ॥ ब्राइमिटेश्वरतघातवघाइ॥२७८
दोयततरह॥चौ०॥ श्वाछुवैंगणसासालीजे॥ भनश्रम
मैभुडघाकीजे॥ मलेलाघसोंठी लतुततराम॥ मरच
लाइचीलौंगगजुडर॥२७९॥चौ०॥ तलेघीतुसेंघाहि
गुपाइ॥ सीजलवाचकमफलगाइ॥२८०॥ दोयततरह
चौ०॥ वैंगणश्रामेकाटकनावे॥ जोराघीडहिंगसों
पावे॥ जवैंवैंगणश्राधेरिजजाइ॥ श्रिमरककचरीपा
वजुलाह॥२८१॥चौ०॥ छाहतुसारलूणकिरवाइ॥ सी
तलहैजेतांकोंजाइ॥२८२॥चौ०॥ वैंगणछीलहोडल
मेपाइ॥ काटलेहेघतमाहतलाइ॥ जवैंसेफेतव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वै०क
२९

लेहोनिकाल॥ बटेकारसग्रद्रकडल॥ २९३॥ चौ०॥ म
रचइलाचीलौंगल्याइ॥ ग्रूरकपररतिहसंगमिला
इ॥ घीउहिंगुकाकरघुंगार॥ वैंगणतांकेउग्रजर॥
२९४॥ चौ०॥ जेपुनातनइसकोंबाइ॥ ग्रौरितनुल
साइ इहग्राह॥ २९५॥ वैंगणभूनेग्रानग्रंगार॥
हथमभोलीपिक्कालउतार॥ घीउहिंगुमेलेहो
पकाइ॥ मरचांसेंधालूणरलाइ॥ २९६॥ चौ०॥ औ
चकसीतलहैजेबाइ॥ तानकीपीवनइसनपाइ
२९७॥ चौ०॥ भ नेवैंगननमेंग्रनाइ॥ छालउतार
डाकिरग्रूसराइ॥ डंडीवाकेसाघरजाइ॥ लेतांकें
मठमेपाइ॥ २९८॥ चौ०॥ राईमरचांसेंधापाइ॥ ग्रा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नकफरलेहोवसास॥ अंत्र रतकेरोग्रहेसमान॥ सोषावे
जिहकूनेहान॥ २८८॥ बेंगणकेपुटपाककीतरह
बी०॥ बेंगणकीछालउतार॥ डंडीवाकीकाटउतार
बेंगणप्रपाणीलवटाइ॥ फिरआटेकोलीमुहहवा
इ॥ २८०॥ बी०॥ फिरउपमाटोलपटावे॥ ताकोभाव
लमाहदबावे॥ जबपाकहितवलेहेनिकाल॥ आ
छैकरहुउतारहुकाल॥ २८१॥ बी०॥ मरचककरइ
लाचीपाइ॥ फिरसैंधेकोंपीसलगाइ॥ घीउहिंगधु
गारलगाइ॥ स्वादभलाहैजेकोषाइ॥ २९२॥ बेंगण
गुण॥ बी०॥ गर्भहैपितधातवधाइ॥ पाचकहलके
बिनसवाइ॥ वगेसोगुणवोहताकाले॥ वगेभेलम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वै०क
३०

वेसीवाले॥२८३॥ कंडूरीकीतरह॥ वै०॥ नरमकंडू
रीकीछीलकैचीरेहिंगुमिलाइ॥ लोनमरचपछतमेतूले
बाहमखवधाइ॥२८४॥ वै०॥ कंडूरीकोछीलसवारे
फांकाकरविचनीरउबारे॥ लाइचीमिरचांसेंघा
नाइ॥ मठाकपूरसेंगवलाइ॥२८५॥ कंडूरीकोछील
बनावे॥ घीउहिंगुकोतुडकाठारे॥ मांजहाथोसेंउब
लाई॥ पीलवुसारकछुमोवाई॥२८६॥ वै०॥ लोन
गलकेलेगेपकाइ॥ दूधमछवघेतिनबाइ॥२८७
वै०॥ कंडूरीकोमनकैमाछीहिंगुघीउपाइ॥ तुडकै
मरचांलूनकिरवारवाइमखलोइ॥२८८॥ काइते
कीतरह॥ वै०॥ कंडूरीकोछीलसवारे॥ फांकाकर

राम
३

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विचनीरतुवारे॥लाइचीमरचांसेंघाराइं॥मठक
रसंगवसाई॥२८८॥चौ०॥ठंडीकरकेंहुरीघाइ
सीतलखावाहरकुविजजाइ॥थोडाखासकासनिहलो
हो॥बाइकंहुरीमेंमूसीकोइ॥२००॥मिहेतुमेकीतरह
दो०॥तुमाछोलेघीउहिंगतुडकेछाह।मिलाइ॥बावे
मरचांलूनसेंघातवधेपितजाइ॥२०१॥टिंडहकीवि
घ॥चौ०॥टिंडहाछैलेफाकांकरे॥घीउहिंगतुडके
मोसडे॥लूणवुमारमरचअमूरछाह॥पावहुजेवपा
कतलवघाह॥२०२॥दो०॥मरमिछुपितकफजाइ॥इ
दुषकजाइजोखावेलाह॥२०३॥वाइंगेकीविध॥दो०॥
उग्रतरहवनाइकेकरठंडेमठेपाइ॥गुणउग्रकेहो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बे॰क
३२

इ निहज़ोइ हटिंडे बाइ ॥ २०४ ॥ पेठे की तरह ॥ चौ॰ ॥
पेठा लीजे टुकडे कीजे ॥ घीउ हिंग कानूड का दीजे ॥
लूण बुसार थोल के पाइ ॥ छाछ आंवले मेल पकाइ
२०५ ॥ चौ॰ ॥ पाके पाव हु चूनं पाइ ॥ जैसे पाके कथो सु
नाइ ॥ २०६ ॥ होर तरह ॥ चौ॰ ॥ मोटे टुकडे कीले ब
नाइ ॥ आन दुध तिह माहि पकाइ ॥ कर हो चाखनी बं
डमंगाइ ॥ कोढे दुध मै पाने पाइ ॥ २०७ ॥ चौ॰ ॥ लौंग ला
इ ची मरच वक ॥ पाइ खाइ तिहि मिठ हि बिसरा ॥ २०८
होर तरह ॥ चौ॰ ॥ पेठा छोटे टुकडे कीजे ॥ पानी मे ता
को उबलीजे ॥ ताह निचोड ले घी नाल ॥ घीउ हिंग के
तुडका घाल ॥ २०९ ॥ होर तरह ॥ चौ॰ ॥ टुकडे गोल क

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रेवेहे कैं॥ ताह पकाइ धीउ हिंग मो॥ मर चंवाल लूण ताह
मो पाइ॥ जु बत्या रहे इतब बाइ॥ ७॥ दो०॥ आद कम
र चंवल लौंग बटाइ॥ भ पवै हत सै घाजे पाइ॥ ३१॥ हिर
विध॥ चौ०॥ वे है की जो है वे काल॥ करट कडे बिच चा
नी रउ वाल॥ व घी आ को जु भी जी हाल॥ धीउ हिंग
उ इके हे घाल॥ ३२॥ चौ०॥ मर च बघ टाइ लौंग भु सा
र ले हे पकाइ लूण जलग र॥ ३३॥ हो रतन ह॥ चौ०॥
आन हो वे ठा कौल उतार ह॥ अंगुली के सम दुक ब
नार हु॥ पाणी मह तिह ले हे उबाल॥ ले हो नि चोडनी
र देहु डाल॥ ३४॥ चौ०॥ मठे ह है लूण आर रखाइ॥ मर
च लौंग कपूर जेः पाइ॥ वाः इविन लो हुडु ब जाइ॥ सी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

प्रे॰क
३२

तलहैककघातवधाइ॥३४॥चौ०॥कंजारीजिसनेम
होकडीकैंदेहन॥कलतिहपानीमाहउवाले॥लेहोव
चोडनीरमटघाले॥पडदेवीजहूरसभकरे॥थीउहिं
गनुडकैमेतरे॥३५॥चौ०॥लूणवुसारखहु।फिरपा
इ॥हलकीहैजोपाकोपाइ॥अग्रवधेअरसचउपजा
इ॥कैमनमवैसीगोलाजाइ॥३६॥ममोलीतरहजि
सनेछोटेकंजारीकहदेहन॥चौ०॥कलताकेनुले
हउवाल॥अवलेअंकापाणीघाल॥लेहोनिचोड
वीजकटाइ॥धीउहिंगुकानुडकापाइ॥३७॥चौ०॥
लौंगवुसारमरचअरखहह॥सेंधापाइपकाइइहब
ह॥स्वासकासकाहूपमिटावे॥अग्रवधेअरसबल

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गावै ॥ ३१ ॥ अंन्ना बुलेकी तरह ॥ चौ० ॥ फल मन हेतु
मडा लंभ्रगाय ॥ गिट कजांकी सकल निकार ॥ जीरा
सैंधा लूण लगाइ ॥ चोडे घीउ धुंगार ॥ ३२ ॥ चौ० ॥
रक्का पित ते गैहै ब मिटाइ ॥ ३३ ॥ भोजन जो इत्ता हसै षाइ ॥ ३४
करेले की तरह ॥ चौ० ॥ छील करेले लूण मिलाइ ॥
पानी मैं ताको उबलाइ ॥ आधे उबलेह लेह निकार
घीउ हिंगु तुड के मेंडा ॥ ३५ ॥ दो० ॥ लूण मरच हल
दी अबरक हाह ॥ सिध रसोई है वे षाह ॥ ३६ ॥ होर तरह
चौ० ॥ छील करेले लूण लगाइ ॥ लेहो निचोड धापडु
व षाइ ॥ कीडा पाणी दे हो निकार ॥ मरच लूण तव डा
लबुसार ॥ ३५ ॥ चौ० ॥ घीउ हिंगु का तुडका पाइ ॥ सारे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वै॰ क॰
३२

गोकें लेहपकाइ॥ लोहूपितकुमरुपजाइ॥ हलकेसीत
लेहैजैपाइ॥ ३४॥ ककोडेकीजरहा॥ चौ०॥ ग्र्यानकके
उ वेटविराइ॥ मारीमेरचपेटतिहपाइ॥ सीधूबांसकी
मेघ्रवाइ॥ घीउहिंगुकेनुडकापाई॥ ३२६॥ चौ०॥ लू
णबुलारनीरकुनपाई॥ घीउरहेपानीसकजाइ॥
रचम्रबलचूर्नपाइ॥ पावेकुष्ठरोगतिहजाइ॥ ३२७
हरेकौलेकीजरहा॥ चौ०॥ चणभिगोवेपासीमाह॥
घीउहिंगुमेनुडकेजाह॥ लूणबुलारमरचबरलकु
ह॥ तिहपकावेइनहूंमाह॥ ३२८॥ हो०॥ काढोमेटबे
नेसोंपाइ॥ कावैठहरेवडेवहवाइ॥ ३२९॥ डेलेकी
कीविधि॥ हो०॥ डलेनाथेग्राठहिनभोंडेमोजलपाइ

अपकगमेकछुवितकुरेलूणसंगड्रोबाइ॥२२८॥कैथ
कीविध॥चौ०॥आनकैथकेफलतंभाइ॥पानीमेंतां
कोउबलाइ॥लेहोनिचोडमरचबुसार॥लूणहिंगुधी
उमेडार॥२२९॥चौ०॥नलबावहबंदूबनेडार॥सीत
लबाइदेतनिकार॥२३०॥चौ०॥उमर्वेकेफल॥काचे
छेटेफलतंलेह॥घीउहिंगुकानुडकादेह॥लूणबुसा
रमरचअरछहि॥पाइबेटाईदीघहोबाइ॥२३१॥चौ०॥
मन्वलछरंतोपितजाइ॥देवदुखीहरहोइसहाइ॥२३२॥
आहकवणवणकीतरह॥चौ०॥आइकलीजेचोह
नमवाये॥नानाकर्केतांहबनावे॥फंकाकरनिवरहा
पाइ॥लूणबुसारमरचकुनपाइ॥२३३॥चौ०॥माटीमा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बे॰क
२८

डेकछडेगल॥साबमहूर्तहोवेलाल॥ग्रग्रावितकेंदेदव
णई॥जेकोग्रेसाम्राहकषाई॥३३६॥तरकीविधा॥चौ॥
तनमेंछीलेवीनाने निकाले॥काटेघीउ हिंगमेगडवे॥लूरम
रवकहलहेनलपाइ॥जाहपकावेलासरषाइ॥३३७॥चौ॥
तलम्राचहेनीरमकाइ॥जबलारहोइतबषाइ॥३३८॥हो
रविधा॥चौ॥वीजकेतलतिहदूरकराइ॥काटेदुघघतमा
हपकाइ॥मिश्रीग्ररवानीरसमपाइ॥लाइचीलौंगमेलके
षाइ॥३३९॥चौ॥मीठोसीतलहेंकववाइ॥पक्वान्नव्रि
तकरीकोषाइ॥३४०॥जंडाकीकलीग्रांकीविधा॥चौ॥
कलीउबालेपाणीमाह॥लेहोनिचोडघीउहिंगपाइ॥लू
णबुसारमरचांफुनपावे॥जबलारहोइतबषावे॥३४१॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चौ०॥ हलके हे मठे मेवाइ॥ पुष्ट मवेसी अरु कफ जाइ॥ ३५२
कदमके फलकी विधि॥ चौ०॥ फल पाणीके वीच उबाले
ताह निचोड घीउ हिंगु डाले॥ लूण बुसार समरच फुन पा
वे॥ जब लाग रहे इतन बपावे॥ ३५३॥ दो०॥ हलकी हे अरु सी
तल आह॥ कहर अरु रोग मवेसी जाइ॥ ३५४॥ केलेकी वि
धि॥ चौ०॥ काचे छोटे फल तिन लेह॥ छील हू रटूक उकी जह
घीउ हिंगु कोनु उकाला इ॥ ला इ चौमर सवां हल दे पाइ॥ ३५५
चौ०॥ सैंधा अरु पाणी फुन पावे॥ पानी सके तब उतरावे
बहु॥ मीठे हे अरु सीतल भारी॥ वाइ रोग देत निकारी॥ ३५६
रवाहलकी फलीकी विधि॥ चौ०॥ लीजे नरम फली रवांह
बीज न होवे जा हू माह॥ घीउ देघीउ हिंगु फिर पाइ॥ हल दी छ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चे० क
३५

छलूण मिलाइ ॥३४७॥ चौ० ॥ कबज है जो ताको बाइ ॥ कफ अ
रुपित न मिटावे बाइ ॥ इह विध पत नमं र वांह ॥ गुण हो वह व
काइ जे षाइ ॥३४८॥ इंद्र की तरहा ॥ चौ० ॥ छोटे न मइ इंड
फल लीजे ह ॥ छाह माह ताको उबलीजे ॥ हिंगु घीउ के माह
पकाइ ॥ ताह निचोइ घीउ मे पाइ ॥३४९॥ चौ० ॥ लौंग इला
र चौह ल ही पाइ ॥ अइक मर बलूण फिर पाह ॥ जु बत्रा
रहोइ तब षाह ॥ आम वात कफ बाइ मिटाइ ॥३५०॥ चौ० ॥
हल की है अरु पाचन आह ॥ गरमी करे जो ताको षाह ॥
३५१ ॥ बाष के साग की तरहा ॥ चौ० ॥ बाघ धोवे पानी
पाइ ॥ घीउ हिंग का तुड का लाइ ॥ पाइ च का वे कुछ बटाइ
अध पाका काढे निचवाइ ॥३५२॥ चौ० ॥ जीरा लौंग हिंगु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्रनाइ॥ बौहतथीउकातुडकालाइ॥ लूणमरचगञ्जइकग्र
रछाह॥ जलसुबभरजोहोवेबाह॥ ३५३॥ दो०॥ मलीहम
वेसीरक्तविकार॥ कुमरोगज्वरपित्तनिवार॥ एतेरोगघटेजो
खावे॥ हलकीहेज्वरघातवधावे॥ ३५४॥ चुलाईकेसागकी
तरह॥ दो०॥ नरमपत्तचौरेचुलाई॥ ताहउबालेकंजीपा
इ॥ फिरताकोलीजेबिचुडाई॥ घीउहिंगुकोतुडकालाइ॥ ३५५
दो०॥ लूणमरचगञ्जाड्रकग्ररछाह॥ भरजोकरैताकोखा
ह॥ सीतलरुचीहेकफजाइ॥ दूावकहेज्वरपित्तघटाइ॥ ३५६
दो०॥ मगहरछरक्तपित्तजावे॥ बौहतेभवलोवेजेवाइ॥ ३५७
कसउधीसागजिसनुपखाडकहहेहन॥ दो०॥ नरमप
तविचवछाहउबाले॥ चावलचुकसपारोघाले॥ लेहनिचो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बे०क
३६

डथीउहिंगुपाइ॥ लैंगजालकेतुडकालाइ॥३५८॥ वै०॥ वा
वलञ्चाटाद्धहिरलाइ॥ लूणमरचपाइवकाइ॥३५९॥ प
वाडकीकलीञ्ञांकीतरह॥ वै०॥ नमकलीञ्ञातुञ्ञान
वनाइ॥ लेहउवालछाछविंडाइ॥ लेहनिचोडरीजनवज्ञा
इ॥ घीउहिंगुकेतुडकालाइ॥३६०॥ वै०॥ छाछमरचञ्ञर
ञ्चहककपाइ॥ लूणमेलञ्चरलासरवाइ॥ हलकीकवजघो
सीजाइ॥ रक्तपितविसदोवमिटाइ॥३६१॥ हलहनसाग
कीतरह॥ वै०॥ नमपतकिचवछाहउवाले॥ निचोडथीउ
हिंगुजेडारे॥ लासराषेकुननतांकेषाइ॥ पित्तसोजकोडदु
वजाइ॥३६२॥ वै०॥ पाडीसागकीतरह॥ वै०॥ छाछपा
इउवालहेपात॥ लेहोनिचोडमलहोकरसाय॥ घीउहिंगु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अरजीसाहेह॥ वौहतपका बहुतडकादेहै॥ ३६३॥ वौ०॥ लू
ण मरचअरछाछमिलाइ॥ अरजीकरकेचूर्नपाइ॥ गर्मदहेमे
टेकफवाइ॥ अरतीसारचूरसदेमिलाइ॥ ३६४॥ पोईसाग
कीतरह॥ वौ०॥ मोटेपोईपातअनाइ पीउहिंगकोतुडका
लाइ॥ मरचालूणइलाचीछाह॥ अरजीहोइनलासचषा
इ॥ ३६५॥ वौ०॥ सीतलद्रववकहैजोवाइ वाइपितकोंदेइ
घटाइ॥ ३६६॥ मेथीकेसागकीतरह॥ वौ०॥ मेथीनमप
तअनीजे॥ पीउहिंगकोतुडकादीजे॥ लौंगलाइचीआद्र
कछाह॥ लूणमरचपीउवौहतनावाइ॥ ३६७॥ वौ०॥ अरजी
करनामाइनपाइ॥ गर्मअहेषासीदुषजाइ॥ ३६८॥ सौंफ
केसागकीतरह॥ वौ०॥ पीउहिंगमेपातपकाइ॥ छाछल

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बै०क
३७

णफुनमरचैं पाय ॥ लासहास्नकर्के जो षाय ॥ कौडी जमिनैनहुष
जाइ ॥ ३६६ ॥ लजालू साग की तरह ॥ चौ० ॥ नर्म पत्त पानी मे पा
इ ॥ उबल जाइ लेहो निचडाय ॥ घीउ हिंगु मे तुडको ताह ॥
लूण मरच स्वरचो डकह ॥ ३७० ॥ चौ० ॥ भुरजी कर्के जो षा
हि ॥ गुलम सो जुमिट पीडा जाइ ॥ स्वास कास मिटम बवधाइ
३७१ ॥ लोणी साग की तरह ॥ चौ० ॥ साग चीर घृत हिंगु
मिलावे ॥ तुडके आदक मरच मिलावे ॥ कठल लूण घृत सा
लसर षाइ ॥ सीतल गर्भ अहे जो षाइ ॥ ३७२ ॥ दो० ॥ ज्ञावक
कवजक हने ताह ॥ बाइ पित के रोग मिटाइ ॥ ३७३ ॥ च[illegible]
आंके साग की तरह ॥ चौ० ॥ नर्म साग षे तन नले आवे ॥ घी
उ हिंगु के तुडका लांवे ॥ लौंग इलाची संठ घटाई ॥ लोण क्षा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कु आ हामरच पाई ॥ ३७४ ॥ चौ० ॥ लासराबकै जेकोबाइ ॥
गुण आगे देइ समझाई ॥ ३७५ ॥ होरनरह ॥ चौ० ॥ नमै सा
गचीर अनाइ ॥ पत्तलीकु हउबाले पाइ ॥ नाह निचोडे दे
धीपावै ॥ चावल आटेको घोलावै ॥ ३७६ ॥ चौ० ॥ आदकल्
ण ताह मैडाल ॥ घीजैसै सांमैसी हाल ॥ घीउ हिंगु जीरा तुड
काला इ ॥ काणीक वज बोवै कफ बाइ ॥ ३७७ ॥ होरनरह ॥ चौ० ॥
सागचणेकाराबस काइ ॥ ताह भिगोइ पाणी पाइ ॥ काढ
पातली पाइ उबाले ॥ जवगल जाइ चावल डाले ॥ ३७८ ॥
चौ० ॥ नूण मरच आदकु नपाई ॥ जीराघीउ हिंगु तुड
काइ ॥ सीतल रूबधा जवलकारी ॥ तीन दोष भ्रमे उ निवा
री ॥ ३७९ ॥ चनालीसाग जिसनोधावकह देहन ॥ चौ० ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

खं०क
३८

पानउबासेपानीपाइ॥ पिंनीकूरनिचोडबणाइ॥ घीउ
हिंगुजीरानुडकालाइ॥ सेंधाञ्चारमरचबपटाई॥३८०॥
दो०॥ सीतलकफपितवाइमिटाइ॥ सोजपेरजावेजोषाइ
३८१॥ पालकसागकीविध॥ चौ०॥ चीरेसागघीउनुडका
वे जीराहिंगताहमोपावे॥ सेंधामरचबपटाईपावे॥ जबत्या
रहोइतबषावे॥३८२॥ दो०॥ सीतलहैबघावेवाइ॥ नैनहूं
कीबोहमोजमिटाइ॥३८३॥ मरबांकेसागकीतरह॥ चौ०॥
आनेआछेपानबनावे॥ घ तहिंगुजीरानुडकालावे॥ छा
छलूणआदकपकाइ॥ पितबघेघटेकफवाइ॥३८४॥
चौलासागकीविध॥ चौ०॥ नर्मपानलेचीरमनाय॥ घीउ
हिंगुकोनुडकाडाय॥ छाछलूणमरचपकाइ॥ है लगंघमेटे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पित वाइ ॥ ३८५ ॥ चूके साग की विध ॥ चौ० ॥ साग चूके का
बीर खनावे ॥ घीउ हिंगु को नुड़का पावे ॥ बैंगण काट ताह मे
पाइ ॥ लूण मरच अम्र स्राइक पाइ ॥ ३८६ ॥ चौ० ॥ हलका अम्र है
व नावहु घाइ ॥ पित वधे अम्र रघ टा वे बाइ ॥ ३८७ ॥ पुनर्नवा सा
ग जिसनो संठी केह देहन ॥ तिस की तरह ॥ चौ० ॥ निचोड़े
पाणी माहु उबाल ॥ घीउ हिंगु के नुड़के गल ॥ लूण हिंगु पी
पल अम्र रछ हा ॥ स्राइक मरच मिलावहु ताह ॥ ३८८ ॥ चौ० ॥
जब खावहु होइ तब घाइ ॥ नेत्र रोग कफ सो जमिटाइ ॥ स्वास
कास ज्वर पांडु मिटाइ ॥ रूची अम्र है कई भी जाइ ॥ ३८९ ॥ चिते
के साग की विध ॥ चौ० ॥ चिते पात तअम्र न चराइ ॥ घीउ हिं
गु के नुड़का लाइ ॥ छाछ लूण मिरच अम्र स्राइक पाइ ॥ जब खा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बै० क

८२

रहो इतव षाइ ॥ दूहे ० ॥ दो० ॥ कोडा है आगन वधावे ॥ सम रोग
न के दूर करावे ॥ दूहे १ ॥ कसूंभे साग की विध ॥ दो० ॥ साग
कसूंभे आ गण के चितेवांग पकाइ ॥ मीठे पितव वनो का
सस्वास यदाय ॥ दूहे २ ॥ जीवती साग जिस नो वठु वनी आ
कहदे हन ॥ चौ० ॥ नाह उवाले छाही माह ॥ घीउ हिंग को
तडका पाइ ॥ लूण मरच अदरक आह दुक कूह ॥ लास हारक
के तिस षाइ ॥ दूहे ३ ॥ दो० ॥ आजन मै वाह जे तव धावे ॥ मीठे
धात वधे जो षावे ॥ दूहे ४ ॥ आगे फुलां के साग की तरह
करीर के विधि मे ॥ चौ० ॥ फुल करीर के नीर मै पाइ ॥ ले
हो निकाल सात दिन नाइ ॥ घीउ हिंगु का तडका लाइ ॥ छा
छ कि कांजी माह पकाइ ॥ दूहे ५ ॥ चौ० ॥ लूण मिरच अग्र द

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कभी पाइ॥ पथ्य रहे बिन सें कफ वाइ॥ ३९६॥ कदम के फू
ल॥ चौ०॥ कदम फूल कांजी मै पाइ॥ जव उबले लीजे निचडा
इ॥ घी उ हिंगु कालानुड कालाइ॥ लूण मरच अम्रा दूक पाइ॥
३९७॥ दो०॥ पाव छुछ छ जु कवज होइ॥ लो हू होइ पित कु
न कोइ॥ ३९८॥ लहा जण के फूल॥ चौ०॥ घी उ हिंगु के मा
हि पाइ॥ लूण मिरच लै आइ दूक कछु हि॥ इन पाइ पकाके षा
इ॥ इसी भांत कफ लमल पकाइ॥ ३९९॥ चौ०॥ सो जू बार हूं न
गो खा जु जाइ॥ गमे है कफ रोग मिटाइ॥ जो अरोग पडते है देह॥
हर भाव सु बने बेत हि॥ ४००॥ कचनार के फूल॥ चौ०॥
फूल उबाल छुछ मिलाइ॥ फिर ताको लीजे निचडाइ॥ लू
ण हिंगु अम्र मरच चतुसार॥ घी उ हिंगु का नुड काराय॥ ४०१॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वै॰ क
४०

दो॰॥ पार पका वे आदक छह ॥ गर्मे ज्वरहे जो षावेताह ॥ संग्रह
णी लेहू के वेकार ॥ पित्त घई को देता टार ॥ ५०२ ॥ सनीह के फू
ल ॥ दो॰॥ जो नहीं फूल फल लग्ग नाइ ॥ हिंगु घी उबिच वौहता वा
इ ॥ आदक मरच लूण ज्वर छह ॥ मेदरोग ।पित्त भ्रम मिटाइ ॥
५०३ ॥ अगस्ती फूल ॥ दो॰॥ फूल उबाल कछु मैडाल ॥ थोडी
हिंगु वौहत घृत घाल ॥ लूण मरच आदक घ तिछाह ॥ सी
तल ताप वौ उधाजाइ ॥ ५०४ ॥ महूए दे फूल ॥ दो॰॥ फूल
बीच की तरी निकाल ॥ पानी पाइ ताह उबाल ॥ घी उहिं
गु को नुडका पाइ ॥ आदक मरच लूण दी साइ ॥ ५०५ ॥ दो॰॥
काढ पार केले हप काइ ॥ वाइ पित प्रमेव मिटाइ ॥ सी ठेहे प्र
घात व घाइ ॥ सार मलाहै जो केवाइ ॥ ५०६ ॥ तोरी आके

राम
४

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पत॥ चौ०॥ नर्मपतपानीमैपाइ॥ जबउबलेतबलेनिचडाइ
घीउहिंगुकानुडकाहीजे॥ अाइकमरचलूणपीसीजे॥५०७
चौ०॥ छाछमिलाइपकाइखाइ॥ माडामोटाहोइ बुर जाइ॥
५०८॥ अंबकेपत॥ चौ०॥ नर्मपतजलमाहउबाले॥ घीउ
हिंगुकोनुडकाघाले॥ लौंगइलाचीअाइकपाइ० छाछलो
णअररामिरचमिलाइ॥५०९॥ चौ०॥ जबत्यारहोइतबखाइ॥
अग्नबधेअरवाइघटाइ॥५१०॥ निंबूकेपत॥ चौ०॥ नरम
पातनिंबूकेल्याउ॥ भलीभांतजलमोअबटाउ॥ लेहनि
चोडघीउहिंगुघाल॥ मरचछाछअरसैंधाडल॥५११॥
चौ०॥ चोडेजैसेबावलपाइ॥ थोडीलासणकेपाइ॥ सीत
लहैफुनअग्नबधाइ॥ दाहपितसंग्रहणीजाइ॥५१२॥ कै

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लेकीजुड ॥ चौ० ॥ केलेजुडकेटुकडेकीजे ॥ पाणीपाइताह
उबलीजे ॥ ताहमिलावेलूणबटाइ ॥ घीउहिंगुकोतुडका
लाई ॥ ६१३ ॥ चौ० ॥ अदरकमरचांछुबुसाय ॥ खावहुलोहु
जाइविकार ॥ सीतलहैकुनअगनबधावे ॥ नारीकेसभदोष
मिटावे ॥ ६१४ ॥ सरसोंकीगंदलां ॥ चौ० ॥ सरसोंगं
दलांचीरबनावहु ॥ छाछडालताकोउबलावहु ॥ घीउहिं
गकातुडकालाइ ॥ लूणमरचअदरकविचपाइ ॥ ६१५ ॥ हे
रतरह ॥ चौ० ॥ चीरगंदलांपतलीकाह ॥ पावेविचेमां
डेमाह ॥ बटाईहोइसातचिनजाइ ॥ केरीजेकेतलकेषा
हम ॥ ६१६ ॥ दो० ॥ कामरोगदेतनिकार ॥ गर्मअहेदिजकह
तपुकार ॥ ६१७ ॥ मलीकीगंदलां ॥ चौ० ॥ नर्मगंदलां

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मलीलेह॥छाछमिलाइउवालहुतेह॥घीउहिंगुकातुड़का
पाइ॥ग्राइकमरखांलूणरलाइ॥५१८॥दौ०॥जवत्यारहो
इतवखाइ॥अकचउपजेघटेपितवाउ॥५१९॥तारणकीवि
ध॥दौ०॥सरणिछीलअणबहुछाह॥अमलीपाइउवाल
हुताह॥टुकडेकरतितितेलतपाइ॥तुड़काहिंगुविचसरणि
पाइ॥५२०॥दौ०॥लौणइलाइचीलौंगवसार॥ग्राइकअम
लपाइसवार॥५२१॥तोरविध॥दौ०॥सरणिलीपकुमाटीला
इ॥लीजेअग्नीमाहपकाइ॥टुकडेकरकेछीलबनावहु॥बहु
तघीउमेहिंगुमिलावहु॥५२२॥दौ०॥छाछइलाचीकेसर
पाइ॥हलवीनीग्राइकलूणमिलाइ॥मह मंरद भांडेका
पाइ॥जवत्यारहोइतबखाइ॥५२३॥दौ०॥चतररसोईआव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बै०क
८२

हे बना बे॥ वडी पकौडी समझकों भावे॥ रुषी हलकी पाचन स्त्राह॥
वधे अग्न मवे सीजाइ॥ ८२४॥ कौलकी जड त्रिसनो भि हिक
हिचकन॥ वै०॥ घीउ हिंगुली जे नुडकाइ॥ भि हिको काटताह
मे पाइ॥ काकलू ण मवर चवहल दे अग्न नाइ॥ लास राख विंन स्त्रा
हापाइ॥ ८२५॥ वै०॥ वाइ पित कफ दे नव घाइ॥ विरीव वे व
लवांनन पाइ॥ ८२६॥ अवार की विध॥ वै०॥ फूलत जड फू
लहोइ रुषकाहु॥ वाइ जी रालूण वीसाहु॥ कौडे तेल मा हित
हपावहु॥ तुष्ट होइ तिह ध्रप रखा वहु॥ ८२७॥ वै०॥ रामो दि
नेसो तीनके चार॥ लेहु सतावी काढ चार॥ ८२८॥ होवतर
ह॥ वै०॥ निंबू वैंगण श्रवकं हूरी॥ पेठा संठ पीपल हमरी
से ममरचकेले जड वासा॥ डेले मकणि होइ जुपासा॥ ८२९॥ वै०॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लूण हलद हअरंजी याराई ॥ सम मै डाले घ पर बाई ॥ त्रै दिन
बीते दो थे जाइ ॥ तब सरसों का तेल अनाइ ॥ ५२० ॥ दो० ॥
जा को गुठली हो इक ढब ह ॥ ता के बीच मसाला पाव हु ॥
बीच तेल सम हूं के पाइ ॥ बंशी दिना के अंदू खाइ ॥ ५२१ ॥ दो० ॥
बडी मेक तक रहे निदान ॥ जे बघर हेन खाइ सुजान ॥ ५२२
अचार ॥ दो० ॥ टुकडे को जे मा सम अणाइ ॥ सीधे गं ने कार
सपाइ ॥ अैसा सींघ हे गल नही जाइ ॥ रसते का ढ हो तेल
मै पाइ ॥ ५२३ ॥ दो० ॥ डाले मरच लूण अत्रै सराई ॥ जब स्वार
हो इत तब खाइ ॥ ५२४ ॥ तिन के अचार की विध ॥ दो० ॥ मा
स उबाले दही मे ॥ को डे तेल तलाइ ॥ मांडे राखे तेल पल
विच निंबूरस पाइ ॥ ५२५ ॥ स्रक की चमडी ॥ दो० ॥ चमडी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बै॰क
४३

सरजस्त्र णाव्रहु भाई॥ लूण बुसार लगाव्रहु राई॥ मलोहा प
मै घृ पसुकाइ॥ टुकडे करहिं गुघोलन लगाइ॥४३६॥ चौ०॥
सरसें कौडे तेल मंगाइ॥ निंबू का रस ता मे पाइ॥ मासले हो रब
बासन माह॥ तु रस होइ तब तां को बाइ॥४३७॥ मछी का मा
स॥ चौ०॥ कौडे तेल मासतलाई॥ हलदी लूण मिलावे रा
ई॥ और तेल सरसों लेआवे॥ रस निंबू को ता मे पावे॥४३८॥
चौ०॥ समस्त्र चार षावत गुण ऐह॥ पित्त व धै रुच उपजे ते
ह॥४३९॥ बडी प कौडी माह की॥ चौ०॥ पीठी की जे माह स्त्र
ण इ॥ सकल मसाले ता मे पाइ॥ करे पकौडी घी उतलाइ॥
मरचां राई लूण पीसाइ॥४४०॥ चौ०॥ मठे माह पकौडी
पावे॥ बैंगन रब्बडी आंध पसुकावे॥ बलास डालकै ला

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सरधाइ॥ जवत्वारहोइतवधाइ॥५४१॥ होरनरह॥ चौ
हालमाह मेवतुलपाइ॥ छीलउतारेलेहसुकाइ॥ पीसेस
कलमसालेपावे॥ करेपकौडीताहतलावे॥५४२॥ मठेपा
इपकौडीधाइ॥ कडीमाहकैपाइपकाइ॥ मोटाहोइवाइघ
टाइ॥ वलअरपुष्टकरेजोधाइ॥५४३॥ होरनरह॥ चौ०॥
पीठीमाह मसालेपावे॥ लमीपिनीताहवनावे॥ टुकडे
गिर्देताहकेकीजे॥ तेलआनतांकोतलीजे॥५४४॥ चौ
घीउहिंगुकोनुडकापाइ॥ लूणकछुहलदीमिलाइ॥ ला
सदारकरैजोधाइ॥ घटेवाइकफधातवधाइ॥५४५॥
भंगकी॥ चौ०॥ पीठीमेगुनवनावहुवीरा॥ आदककमरच
हिंगुअरजीरा॥ करवडीआंतेलेहसुकाइ॥ घीउहिंगु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वै०क
४४

मेलेहनुडकाय॥४४६॥ चौ०॥ लूणवुसारकुठविचपाय॥
जवखारहोइतवघाय॥अथवालेकडीमोपाइ॥ मेंदग्रग्न
बावाहींजाय॥४४७॥ चणेकावेसन॥ चौ०॥ चणेवेसन
माहजलपाय॥हलदहिंगुमरचलूनरलाइ॥ताहरीघ
घालीमोपाइ॥सोटीहाथोंसाघवनाइ॥४४८॥ चौ०॥ काट
कुरीसेंटुकडेकीजे॥घीउहिंगुकानुडकादीजे॥ कांकुंआव
लेस्वादकपाइ॥जवखारहोइनवघाइ॥४४९॥ चौ०॥ कैतल
घावेमठेमाह॥सीतलरुषोककवाइमिटाइ॥४५०॥ मिठे
वडेकीविद्य॥ चौ०॥ पीठीकरहिंगुजीरापाइ॥ अंद्रवचूने
स्वादकरलाइ॥लावीतालचिनीलूणमिलावहु॥लेक
रघ्रतमांहतलावहु॥४५१॥ चौ०॥ पितप्यासमिटावेवा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

इ॥ वलवृधि गरमी उपजाइ॥ भीमसेन इह वडे वनाइ॥ विना
पुन फल कै सेषाइ॥ ८५२॥ धोइ वडे की विध॥ दो०॥ वडे प
काइ भिगोइ के पावे नहे माह॥ जीरा सैंधा अरु कछु नराई पा
इ जु षाइ॥ ८५३॥ कडी॥ दो०॥ वेसन छाछ हरलाइ कै दीजे कडी
वनाइ॥ षाइ वडी भारी अहै न चअरु पित वधाइ॥ ८५४॥
कांजी की विध॥ चौ०॥ कोरे भांडे कौं लेआवे॥ अंद कोडा तेल अरु
नावे॥ जीरा सुंठ मेर च अरु राइ॥ लूण हिंग विच पाणी पाइ॥
८५५॥ चौ०॥ कणक चून की कांपनी कीजे॥ भांडे पावे घृत पर
धीजे॥ दो दिन जाह ढाढ कर कु पाइ॥ फिर पाइ मसाले वडे
पकाइ॥ ८५६॥ चौ०॥ वडे मिलाइ कांजी मे पाइ॥ तव बाव हत
वै ते दिन जाह॥ भष फल गेअरु वाइ घट ।वै॥ मेको अैसा कांजी षा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वे०क ४५ वे॥४५७॥ चौ०॥ रक्तविकारकिकुष्टीग्राहे॥ नैनरोगनष
वावोत्ताह॥४५८॥ अमलीकीवडीआंकीविध॥ चौ०॥ नर्म
नर्मकुंवलीलेह॥ पीठीसाथरलावहुतेह॥ डालमसाले
लेहपकाइ॥ वाइपितवावतहीजाइ॥४५९॥ चौ०॥ पाचककतु
शमहबवधावे॥ पेटसोजुहेइनषावे॥४६०॥ घुआसीवडी॥
चौ०॥ माहदालकोपीसमसुकाइ॥ वेरवरावुवडीवनाइ॥
लौंगइलाचीमरचगुनाइ॥ धनीयासूंठहिंगुविचपाइ
४६१॥ चौ०॥ पीपलजीरावडीवनावे॥ आणतेलतिलताहि
तलावे॥ देधुंगारमठेजोपाइ॥ जीरालूणपाइकैषाइ॥४६२
चौ०॥ कोमलरोचककवाइघटावे॥ पुष्टकरेअरुधातवधा
वे॥४६३॥ होरतत्रह॥ चौ०॥ पीठीजीराते वोपाइ॥ हिंगुसा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

षहेलूण पीसाइ॥ वडे करे घृत माहि तलावे॥ अथ पवा तूले तेल
विच पावे॥ ५६४॥ चौ०॥ घी ठ हिंगु का तुड का लाइ॥ छोले ह ही
मसाले पाइ॥ वल उपजे अरु धात वधावे॥ ऐसे वडे पकाइ जो
खावे॥ ५६५॥ मसरी की खीचडी अथ॥ चौ०॥ दाल री धोइ पा
णी पाइ॥ छील उतार होइ धो जल पाइ॥ चावल पानी माहि पी
सावे॥ हिंगु लौंग हालची नी पावे॥ ५६६॥ चौ०॥ अरु कमर
चोंजी रापाइ॥ मास जिवै घृत माहि तलाइ॥ जव तार होइ तव
खावे॥ रुच उपजे वल धात वधावे॥ ५६७॥ खीर की विध॥ चौ०॥
जेह कमण को दुधा लावे॥ उटावे पंज सेर जल पावे॥ तेह से
र विच चावल पाइ॥ जल के सा घृत ताहि मिगाइ॥ ५६८॥ चौ०
जव देखे जो तल सु काई॥ मेद खान पकाइ खंड रलाइ॥ ५६९॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वै०क
४६

फिटेदुधकाइलाज॥ वै०॥ जेकाहुकादुधफिटजाइ॥ सिपीज
लाइस्वाहितिहपाइ॥ वैंगणफूलकिमकलीबीड़ा॥ पीसपाइ
दुधग्वाछाकोपा॥ ४७०॥ दहीकाइलाज॥ वै०॥ दहीनजंमे
जासकेदुधमलाकडाइ॥ होइदहीपनीसेंपीसजॉवलेपा
इ॥ ४७१॥ घीउ॥ वै०॥ घीउकोजोहोइविगडकेजाइ॥ सौं
फपाइकेगर्मकराइ॥ सातवारलातेजलधोइ॥ घीउनवा
माबणसाहोइ॥ ४७२॥ मास॥ वै०॥ जासमासतेवासजोआ
वे॥ संघस्वाहपाइधोआवे॥ पातविलकेपाइसीधावे॥ स
कौनमेवासजनजावे॥ ४७३॥ तरकारी॥ वै०॥ जेतरकारी
सीधकेवीहतलीहलघीपाइ॥ डालखटाईताहमेस्वादमला
होइजाइ॥ ४७४॥ खटाईलूण॥ वै०॥ जिहसाललणमेहोइख

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

टाइ॥ घीउमेतलेबटतनजाइ॥ लूणवैहतसालमपाइ॥
बावलहेघीपावहुताह॥५७५॥ मछीकेकंडेदूरकनेकी
विध॥ चौ०॥ मछीकीहेफांककरावे॥ लूणमरचतीराची
सावे॥ होरमसालेताहलगावे॥ केलेपातनसोंलपटावे॥५
७६॥ चौ०॥ ताकेउपरहामवंधावे॥ जैहिनघपेरबसकावे॥
टुकडेकरकतीसाथबनावे॥ घीउहिंगुकातुडकालावे॥
५७७॥ चौ०॥ तुरसीअवरमसालेपावे॥ केपातपलेटमाटील
पटावे॥ ताकेउपरआगमुनावे॥ पाचककग्रहेवोहतजोषावे॥
५७८॥ मासबणाउणकीविध॥ चौ०॥ मासबकराका
टबनाइ॥ केअवरकिसीकामासअणाइ॥ सडींकेजलधोवे
आय॥ फिरमाटीकेभांडेपाइ॥५७९॥ चौ०॥ तपूनीरसोति

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हघोआवे॥ मलेलूणअरतेलसुकावे॥ तरहमासकीताहा
वनावे॥ जवचाहेतवरीघोषावहु॥ ५८०॥ सकामास॥
चौ॰॥ सकामासलेहकटाइ॥ घीउहिंगुकानुडकापाइ
पाइमसालेरीघेताह॥ ताकोपावेमठेमाह॥ ५८१॥ चौ॰॥
राईमरचसंठपीसाइ॥ लूणपाइकेताकोषाइ॥ ५८२॥
अचारकीविध॥ चौ॰॥ आदककेछिलछोटाहोइ॥ के
वणतेरीआनोकोइ॥ सरसोंसणिअंबअंावलेकेलेका
चाकिनिंबूरसडेले॥ ५८३॥ चौ॰॥ इकबीचनकलपेकअ
नाइ॥ मलोबेलूनघटाईराई॥ देमासाफलकेबिचपाइ
डलतेलकटघ्रूपरषाइ॥ ५८४॥ चौ॰॥ देहसनाबअरचा
रबनावहु॥ जबचाहेतबहीतुमषावहु॥ ५८५॥ पडेअं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

की विध॥ चौ०॥ चावल पीहे दुध मे छ्वा एषंड रला इ॥ पड़े
तली विषे घीउ मे घाल तव घेओ जो पाइ॥ ५८६॥ होर॥ चौ०॥ चवा
पीस कमे रू ऐ दुध घेओ लषंड पाइ॥ घीउ तलो वल घाल तहो
इ विस के हे प मिटाइ॥ ५८७॥ होर॥ चौ०॥ घीउ कड़ाही मा
ह तपाइ॥ अरके अंब वकोरस निचडाइ॥ पड़ा कर्के मिश्री
पाइ॥ पित ब्वाइ घटे जो आइ॥ ५८८॥ चौ०॥ मारी है निवल
बल पाइ॥ मे ह अगन कों देत बुटाइ॥ ५८९॥ समोसे की विध
चौ०॥ मैदा घीउ पाइ कै मले॥ जल मैं गूंने मंडा कर्ये॥ कण
रइला चीलैंग अंबनाइ॥ मेर ब्व हाथ मिश्री विचपाइ॥ ५९०॥
चौ०॥ मेडे पाइ समोसे की ने॥ घीउ तपाइ ताहत तलीजे॥ अ
रो वासनी षंड अंबनाइ॥ पत पके तब लेहो पकाइ॥ ५९१॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बे०क
४८

दो० ॥ मीठा भारी है जो षाइ ॥ बाइ पित्त कों दे तघटाइ ॥ ४८२ ॥
तोरविधि ॥ दो० ॥ मैदा ज्ञान सत्त मिलावै ॥ षंड चासनी मा
ह पकावै ॥ है अंब्रत समपित घटावै ॥ भारी है जो ताको षावै
४८३ ॥ मालपूडे की विधि ॥ दो० ॥ मैदा मै वे घृत अन्नाइ ॥
मिश्री के गुड सर्वत्त पाइ ॥ लौंग लाइ घी पाइ घोलाइ ॥ मर
च व जौरी चूर्न पाइ ॥ ४८४ ॥ दो० ॥ घीउ कड़ाहै पाइ तत्त पा
इ ॥ कटोरी साच कड़ाही पाइ ॥ मैदा कडकी साच किया इ ॥
लो कर्कै पकावै षाइ ॥ ४८५ ॥ दो० ॥ बाइ पित्त कों देत्त घटाइ ॥
पुष्ट करे बल बाह बधाइ ॥ ४८६ ॥ दहीके वडे की विधि ॥ दो० ॥
मैदे मै घी उड लबटाई ॥ दही पाइ कै ताह गुन्हाइ करे अ
द जित बडे बनावे ॥ घीउ तत्ते लेवंड माह पकावै ॥ ४८७ ॥ दो०

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रबतुपजेजेता किछ बाउ॥ ता इचित्त कों रखबटाइ॥ बडे कीत
नह॥ चौ०॥ मैहाथोलेहरही मिलाइ॥ चौ हत्तमलेजगतुप्रभ्राइ॥
लैगइलाइ चौ मरचांपावे॥ बडे कन्हे थी तु माहत्तलावे॥ ५९९
चौ०॥ खंडचासनी माह पकावे॥ चलक तां हे जे को षावे॥ ५००
कसारकीत्तनह॥ चौ०॥ गुंने कण कथी तु विचपाइ॥ होरमा
गरकखंडरलाइ॥ खंडकुणक मन्नुरी विचपाइ॥ लाइ ची लैं
गरकरचमिलाइ॥ ५०१॥ चौ०॥ मरचां पाइकसार बनावे॥ हल
को आधोरचतु पजावे॥ किसी वसनकाकवे कसार॥ तर हरही
हे मनमें धार॥ ५०२॥ सेवीआं॥ चौ०॥ मैहाथोलेथी तुआना
वे॥ तांको गुंहे चालीपावे॥ जैसो जो सी कवे बनाइ॥ तलेथी
तुखंडपागेषाइ॥ ५०३॥ होर विध॥ चौ०॥ सेवी गुंनेताहउ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बै०क
५९

बालेनृतपाइ॥ नीरकाढकैषाइऐघीउवंडविचपाइ॥
५०४॥ कंडी॥ चौं०॥ बेसणघोलेछाछनृणाइ॥ हलदसंठ
हिंगुमरचांपाइ॥ जीरालूनइलाचीलेह॥ घीउहिंगुका
नुडकादेह॥५०५॥ चौं०॥ पाचककरेचककअगनवधावे॥ हलका
बोजापितनवधावे॥५०६॥ चौं०॥ वाबलकोअणपीसावे॥
मिश्रीकोसर्बनघोलावे॥ लौंगइलाइचीमरचांपाइ॥ ताह
पकावेअगनचडाइ॥५०७॥ चौं०॥ पाचकहैजेताकोषाइ॥ वा
इपितकौंदेतघटाइ॥५०८॥ मुरबेकीविधा॥ चौं०॥ जंभीरी
कोछीलसुवार॥ ताकीतरीअंलेहनिकार॥ छडवासनी
विचपवाइ॥ लौंगइलाइचीमरचरलाइ॥५०९॥ चौं०॥ अ
मवधेजेपाकेंषाइ॥ कफनहीवधेघटेतिसवाइ॥५१०॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लैर॥ दो०॥ अवउवा हेनीर मै मुर वालेह बणाइ॥ बिनैं
नी केंग तरहक वे मरवा बाइ॥५११॥ बटाई घाण की
बिध॥ चौ०॥ सावण भादै मास जो आवै॥ सैं घेसा पबटा
ई पावै॥ असू कतक मास जु आई॥ मिस्री के संग खाइ बटा
ई॥५१२॥ चौ०॥ मघर पोह जो आवै आह॥ अदूक लूण
मरच संग खाह॥ माघ फगुण दो मास जो आवै॥ तरका
री मैं पाइ खावै॥५१३॥ तिल॥ दो०॥ तिल भुने सें घा मर
च निंब रस पाइ॥ अगन बधे तन ताह के माह स्या ले खाइ॥
५१४॥ पसीअंा॥ चौ०॥ मेहा मेवे घी उ मिलाइ॥ बुरा चू
नी लेह कुनाइ॥ तां को गुहै पाणी पाइ॥ घीउ मैं पचो लेह
पकाइ॥५१५॥ चौ०॥ खंड चावल नीपा गे खाइ॥ मीठा छुई

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

खे॰ क्र॰
५०

घटे खुर [illegible] ताइ ॥ ५२७ ॥ हैरा ॥ दो० ॥ मैदा मोरघीउ मैं मिस्री
ता [illegible] ताइ ॥ कै खजूर कै खोवरा परी करे वनाइ ॥ ५२८ ॥
दो० ॥ घेवर की ॥ दो० ॥ मैदा मोइ घीउ मिलाइ ॥ घोले तां
को दूध मिलाइ ॥ बीच कड़ाही घीउ न पावे ॥ मैदा साथ
कटोरी पावे ॥ ५२९ ॥ दो० ॥ ताके घेवर मेले वनावे ॥ खंड चा
सनी पाके षावे ॥ मो बा वित घटावे वाइ ॥ जे तां कों दे तां
कों षाइ ॥ ५३० ॥ जलेबी ॥ दो० ॥ मैदा चावल को पीसाइ ॥
ताको घोले सर्ब तन पाइ ॥ घीउ कड़ाही माह तत पावे ॥ तांथों मे
मैदा छिड़कावे ॥ ५३१ ॥ बाबर की ॥ दो० ॥ बाबर गिंदवना
इपजाइ ॥ रखवा घोघ टे वितन वाइ ॥ ५३२ ॥ खजूर की त
रह ॥ दो० ॥ [illegible] टा चावल कमा क खुणाइ ॥ लेइ वनावर रा॰
५

ਦਹੀ ਮਿਲਾਯਾ॥ ਗੰਗੇਤੇ ਤਰ ਰਹਬ ਜ਼ੂਰ ਰਵਨਾਵੇ॥ ਧੀਤ ਮੈਂ ਤਲੇ ਲਗੇ ਬੰਡ
ਪਾਇ॥ ਪਰਤ੍ਰ॥ ਚੌ°॥ ਹੈ ਚੀਕੁਲੀ ਜੇ ਕੋ ਬਾਇ॥ ਵਾਇ [illegible] ਦੇ ਤਪ
ਟਾਇ॥ ਪਰਥ॥ ਕਬੂਤਨਾਲਕੀ॥ ਦੋ°॥ ਮੈਦਾ ਮੇ [illegible] ਤ ਮੈਂ ਮੰਡਾਗੁ
ਰਬਨਾਇ॥ ਕਰ ਚੌਬੁਟਾ ਧੀਤ ਮੈ ਤਲੇ ਬੰਡ ਪਗਾਇ॥ ਪਰਥ॥ ਸ੍ਰੀ
ਮਤਨਾਲਕੀ॥ ਚੌ°॥ ਮੈਦਾ ਗੰਗੇ ਦੁਧ ਮਿਲਾਇ॥ ਤਿਹ ਮੰਡਾ ਚੌ
ਕੁਟ ਬਨਾਇ॥ ਵਾਸਤ ਕੁਝੋ ਕਪੂਰ ਸ੍ਰਬਨਾਇ॥ ਵਾਇ ਪਿਤ ਨਾਸੇ ਜੋ ਖਾ
ਇ॥ ਪਰਥ॥ ਸੋਹਣ ਸੋਗ॥ ਚੌ°॥ ਦਹੀ ਦੁਧ ਲੀਜੇ ਸਮ ਭਾਇ॥ ਚਾ
ਉਲ ਡਾਹੀ ਮੇ ਸ੍ਰਬ ਟਾਇ॥ ਸ੍ਰਾਧਾ ਸ੍ਰਾਦ ਰਹੇ ਤਜਾਇ॥ ਚੌਥਾ ਹੈਸਾ
ਚਾਵਲ ਗਾਇ॥ ਪਰਤ॥ ਚੌ°॥ ਸਾਰੇ ਬਗੇ ਮਿਲ ਲੇ ਸ੍ਰਾਉ॥ ਜਾਹ ਬਾਰ
ਵਾਹਿ ਸਾਪਾ ਇਨਾ ਤੇ ਸ੍ਰਧਾ ਧੀਤ ਮਿਲਾਵੇ॥ ਧੀਤ ਬਰਾਬਰ ਮਿ।
ਸ੍ਰੀ ਪਾਵੇ॥ ਪਰਤ॥ ਚੌ°॥ ਲੈਂਗ [illegible] ਸ੍ਰਬ ਨਾਇ॥ ਸੰਠ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

से०क ५१

कुचरत्ताहमैपाइ ॥ जवसभमरुकैघीउचराय ॥ लेहउतार
ताहतवघाइ ॥ पर२८ ॥ चौ० ॥ वाइपित्तघटैजोघाइ ॥ स्वादभला
हैघानवघाइ ॥ पर३० ॥ सतावीकासाग ॥ चौ० ॥ अमलीम
लीअंब वतुअहि ॥ निंबूबीरस्वजुवाइ ॥ नमैपत्तजाकेअ
नाइ ॥ पिनोकीमेहाच मिलाइ ॥ पर३१ ॥ चौ० ॥ अदूकमरव
तूणमिलाइ ॥ दहीकरचतहींमेपाइ ॥ जोरेहिंगुकादेहधं
गार ॥ जुदेजुदेसभसागसवाय ॥ पर३२ ॥ चौ० ॥ रक्तपित्तअ
रछर्दिमिटावे ॥ सुखलोस्वादहोइजोपावे ॥ पर३३ ॥ रुहंज
णकीविधि ॥ चौ० ॥ जडतुलतुलोनमेअनाइ ॥ पततलेटुक
डीलवणाइ ॥ रावतेलमेतूणरलाइ ॥ वीजेरातधात
कढाइ ॥ पर३४ ॥ चौ० ॥ जववहुतेलमाहगलजाइ ॥ तूणम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रचनिवूरस्स पाइ॥ घातमयोग मवेसीजाइ॥ ताकीदाडमि
टेजोपाइ॥ पद्वंध॥ श्रोवले॥ दो०॥ नीरउवालेश्रोवलेतेल
हलदहिंगुपाइ॥ माईसैंघासंठमरचनुर्शहोइतवषाइ॥
पद्ध॥ गुरवेकीविध॥ दो०॥ उवालेश्रोवलेनीरमिलाइ
केरउवालहेदुधविचपाइ॥ काढेसीवसाघलगावे॥
तिह चहुंतरफीतेकेककराचे॥ पद्ध॥ दो०॥ वासकयोक
ररखनाइ॥ जोडचामरीकेविचपाइ॥ तोनहोवतिलहू
रकरावे॥ वडेभाग जिहतंकोपावे॥ पद्ध॥ वीरकीविध॥
दो०॥ खगनीरदूधघउवे॥ चोपाहसामिश्रीपाइके
सवश्रोरकपूरमिलाइ॥ पद्ध॥ दो०॥ चंदप्रभाउकहतहै
साह॥ घातवधकरेजोपाइ॥ रक्तपितनश्रवजाइघटाइ॥ पारे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वै०क
५२

अंम्रत तस मकल माह ॥५४०॥ इह कीबिध ॥ चौ० ॥ मिठी
अग्नी दुध कडाइ ॥ चौ थाहे साता ह जलाइ ॥ ठंडी करके
इही जमाइ ॥ तु शोह छतांक मे पाइ ॥५४१॥ चौ० ॥ अगन
बधे अरधा सब धावे ॥ वाइ पित भी सगली जावे ॥५४२॥
गो इही गुण ॥ दो० ॥ मबल गावे बुध हेद सगले रोग मि
टाइ ॥ अति पावे त्रहै समनते समज इही गुण गाइ ॥५४३॥
भैस इही गुण ॥ दो० ॥ सीतल मि ठची कणा भैस इही
गुण जाण ॥ वाइ पित कफ रोग कुन कर्त इन कीहान ॥
५४४ ॥ दो० ॥ चैत अंब्रीर रबे शाब कुन असक कड़ि कक अग्रा
य ॥ इही न खाके मांह तै अंब्री रन सबवदाय ॥५४५॥ चौ० ॥
मिश्री धाव हु भात मै भैस इही मे खाइ ॥ वाइ पित तां कीय

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दे अंत्रा ठ मासमै षाइ॥ ५४६॥ मठे की विधि॥ चौ०॥ दही नि
चोडे कूवडे षाइ॥ अंत्राछे पानी षाइ छै नाइ॥ गाजहं नैं जीरा
षाइ॥ ताको षावे लूण मिलाइ॥ ५४७॥ अतीसार अरु षास आ
र॥ मंद अग्नकों देत मिटाइ॥ पाणी लीजे दही कुठाइ॥ गाड
ढा गोदुध मिलाइ॥ ५४८॥ चौ०॥ मठे भांडे कौ षु गार॥ मठे
लूण षाइ विचडाय॥ अतीसार अरु सूल मिटाइ॥ मिटै म
वेसी ताको षाइ॥ ५४९॥ सिघरणि की विधि॥ चौ०॥ पाणी
दही ले ह निकलाइ॥ ढाणद्ध सों मिश्री पाइ॥ कपूर इला
ची जे के पाइ॥ स्वाद भला है जे को षाइ॥ ५५०॥ चौ०॥ मीठा
है वल वीर्य तनवधाइ॥ वाइ पित कों देत घटाइ॥ ५५१॥ हो
रविधि मीमसेणी॥ चौ०॥ पंजसेर षंड का दही अनावे॥ वती

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ऐसे सिख्खी पावे ॥ धीउ जो पावे हे सिर साहि ॥ होवे से मरस हत्त सि
लाइ ॥११४॥ दो० ॥ लैं गड लाइ ची मर चक्र नाइ ॥ हाल छि नी
जव गी पाइ ॥ धे दोपा चक सी रेवा वे ॥ सभ को कैंडे पाइ छु ना
वे ॥११५॥ दो० ॥ पाइक करवास्त करवाइ ॥ जे ठहाडग्ग्र सरू
त्रिक स्राह ॥ गरमी बोहत्त होइ जिह बाइ ॥ घाके नार बोहत्त मो
ग करा इ ॥११६॥ राजहंस नी सिखा ॥ दो० ॥ दुध महि का
बोहत कडा वे ॥ छाछ पाइ के दही जमावे ॥ ताह छुना वे सिख्खी
पाइ ॥ मीठा है वल पितवधाइ ॥११७॥ लालारिसाल सि
खा ॥ दो० ॥ सिख्खी ग्र रक करछा ने दही मिलाइ ॥ सीत
ल मिठा षाइ तहि हैता पितय घटाइ ॥११८॥ होर विधि ॥ दो० ॥
मरच डलाइ वी सिख्खी सर तघी उदय पाइ ॥ सिखा की

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जे छूटा णके वाइ पित्त घटै जाइ ॥५५७॥ षरबूजे की सिध
णि ॥ चौ० ॥ द षरबूजा मिश्री छुहारा कपूर मिलाइ ॥
पित्त कफ छम नग घटै र चतुपजे जो षाइ ॥५५८॥ हीरवि
ध ॥ चौ० ॥ पके अंब वरसाला आन ॥ षरबूजे मिश्री सो छा
न ॥ पाइ कपूर घटै पित्त वाइ ॥ सम भजै उतम है जो षाइ ॥
५५९॥ हीरविध ॥ चौ० ॥ छीले कावे अंब अम्रना वे ॥ ताके
टुकडे गिद वनावे ॥ ताको पाणी माह उवाले ॥ ताते का
ढ अम्र रजु लडला वे ॥५६०॥ चौ० ॥ जल अमूर दुध अंब मो
पावे ॥ न लेहा यमो ता हठनावे ॥ मिश्री औरक पूरमि
लाइ ॥ तीन हेषजा वे जो षाइ ॥५६१॥ हीरविध अमली
की ॥ दो० ॥ अमली पकी लौंग मरच अम्र इक मिश्री पाइ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वै॰क
५८

जलकफरबसों छुनी सिबाइ पित घटजाइ ॥ ५६२ ॥ हीरजमण
चौ॰ ॥ पाके फल जामण श्रुनाइ ॥ कीलहू रकरजल मो पाइ
मिश्री अवर रस लीजे पान ॥ पाइ कफ रलीजी वैछान ॥ ५
६३ ॥ चौ॰ ॥ कफ अरबाइ घटे जो षाइ ॥ हलेको हे अवर रस
च उव जाइ ॥ ५६४ ॥ चौ॰ ॥ रस बिजोरी ले हो कढाइ ॥
त्रिगुणी मिश्री सरबत पाइ ॥ छाने मरच कपूर मिला
इ ॥ सलज्ञ जी ऊंघटे जाइ ॥ ५६५ ॥ चौ॰ ॥ जेकू बजी अबतेव
र मिटाइ ॥ स्वास कास जावे जो षाइ ॥ ५६६ ॥ निबूकी रसा
ल ॥ चौ॰ ॥ निंबूरस दे पैसे अढान ॥ आदू करस लेता हस
मान ॥ दे पैसे रस अढान बिजोरी ॥ नले रवरस दो पैसे के
री ॥ ५६७ ॥ चौ॰ ॥ मिश्री पैसे लेहो पचास ॥ सरबत घोल

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मिलावकुत्तास॥ लौंगमरचकुपरमिलाइ॥ वाइवित्तर
क्तग्रजीर्णजाइ॥ ५६८॥ अनारगी॥ दे०॥ रसअनारगी
काढकै मिश्रीअरकरसवाइ॥ छाणकपरहिविकण
हे वाइपित्तघटाइ॥ ५६९॥ जंभीरी॥ वै०॥ वडुपेसेरस
जंभीरी॥ चालीपैसेमरचतमिश्री॥ छाणिलौंगकुपर
रलाइ॥ मलप्यासवाइकफजाइ॥ ५७०॥ वेरकी॥ वै०॥
अन्नाकुपाके वेरअन्नाइ॥ पाणीमैलीजो उबलाइ॥ मिश्री
मरचतमेलकनाइ॥ जावत्तीलौंगइलाचीपाइ॥ ५७१
पाइकुपरकुटिपितजाइ॥ मीठअनहेजुताकोवाइ॥ ५७२
वै०॥ घाटोपकलअनरफूलजोरवाकेसकाहोइ॥ इहवि
धजोसिवर्णकहीकरवावेसमकोइ॥ ५७३॥ छाहकी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वै०क
९५

बिधा॥ चौ०॥ हछु गोका हथीअं गाबे॥ अठ मोहे सा पाणी
पावे॥ इंडके अछे आह बनावे॥ सें घा जी रा ता ह मिसा
वे॥५७४॥ चौ०॥ ग्रा न हिंगु ही जेंधु गाय॥ बाइ पित्त कफ
देत निकाय॥ सास कास संग्रह णी जाइ॥ मेंद मवे सी मि
टे जु धाइ॥५७५॥ होर बिधा॥ चौ०॥ तरह उघ्र ली छु ह बि
ना इ॥ लूण मरच जीरा हिंगु पाइ॥ लाइ बी अ्रौर कद
रस्त्र नाइ॥ चूर्न नां रगी मिलाइ॥५७६॥ होर बिधा॥ चौ०
म घर सा उण भाहें वोह॥ माघ अ्र सा ड वाइ का वोह॥
इनी महीनी वाइ व धाइ॥ पीछे लूण छुछ बिच पाइ॥५
७७॥ चौ०॥ वे श्रा बडे ठ अ्र स जु छा य॥ छाछु पी झो बिच
मिश्री पाइ॥ कणु ण बेत जो कक अ्र घ काइ॥ पीझो संठ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मरचपीवलवाय ॥५१८॥ कांजी की विध ॥ दो० ॥ तप्तनी
रसें फंछछनावे ॥ भांडा मे रखें ब्रावले पावे ॥ सुंठ जीरा
हिंगु पुगाय ॥ लाइ चीरा इं रस ब्राइ कजाय ॥५१९॥ दो०
वडे पाइ रखे बेदिन चार ॥ तुर्श होइ तब ताहि खुवार ॥ अंग्रा
उ रोग कफ नवार ह्वटावे ॥ पाचक अग्न धातु बधावे ॥५२०॥
भैंस दुध गुण ॥ दो० ॥ भैंस दुध अनाइ के ॥ उपलन सें
कडाय ॥ बासा करके कपरसें पीवे मिस्री पाइ ॥५२१॥ हि
रा ॥ दो० ॥ भैंस गांइके दुध कों फठ मांग्रे संग लाइ ॥ अंग्र
रत समलै मिस्री पीवो कफ रवसाइ ॥५२२॥ दो० ॥ मैं
रउम दुध तरह बकरी दुध अनाइ ॥ पीजे पोडा काडकै
सुंठ मिस्री पाइ ॥५२३॥ दुध के गुण ॥ दो० ॥ हलका म्रहे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अरसीतलअहेघटेपितअरवाइ॥ कहेरसाइणतुलहै
जोपीवेदुधगाइ॥५८४॥ भैसकादुध॥ मीठाअरसीतल
अहेअरफुनभारीहोइ॥ नींदभैसकेदुधमैदेतवुधकों
षोइ॥५८५॥ बकरीकादुध॥ दो०॥ अजादुधजुकावतुअ
हेस्वासकासघटाइ॥ गांडदुधतेहैभलोवौहतीभुषल
गाइ॥५८६॥ होरविधा॥ दो०॥ अग्नबधतहै प्रातकोंव
लहैपेहवीआइ॥ धातवधेगुणवौहतहैदुधरातपी
आइ॥५८७॥ दो०॥ पेहलेभोजनाउकोंपाछेदुधपीआ
इ॥ धातवधेगुणवौहतहै मोपेकहोनजाइ॥५८८॥
भुषकाचूर्न॥ दो०॥ चितासुंठआंवलेआन॥ षंडइ
लाइचीलेहसमान॥ कूटकपडेलेहेछनाइ॥ रसावि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जौरीनालहिवाह॥५९०॥चौ०॥जवसकेतवतांकोषा
द बघेअग्रस्रअजीर्णजाइ॥५९१॥भोजनकर्केदहस्रो
कपडना॥अगस्तंकुंभकर्णीनमसलिंबवडवानलं॥
अहारपच्यणमाअथैसिमयरसचाविकोदरी॥५९२॥
पांनखालेकीविधि॥चौ०॥सोनेरंगपांनलेअवाव्है
कपसपारीचूनापावहु॥थोडातातहकपरयमिलाइ॥
भोजनकर्केपाछैखाइ॥५९३॥चौ०॥कौडेमीठेखारेअा
हा॥नेनाकेदुखसगलेजाह॥कमखडमुखवासखटाइ॥
धातवधेमुखसोभापाइ॥५९४॥अजीर्णकीविधि॥चौ
पचीनरोटीसीतलनीर॥थोडथोडापीवहुवीर॥मा
सअजीर्णहोवेजाइ॥अागेहरडजोखावेताह॥५९५॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बे॰क
५७

वै॰ ॥ दुध पीउ स्रजी ग्यानि भपे स्रा ॥ पी वेछा हत्ता हदुषग
रे स्रा ॥ पीउ कोहोइ स्रजी ग्यानि जास ॥ केले स्रा एा बुला वे
तास ॥ पदे ५ ॥ वै॰ ॥ होइ स्रजी ग्यानि बाइ मठाई ॥ ठे स्रनाद
मीता हबुलाई ॥ होइ स्रजी ग्यानि मछी जाको ॥ कां जी स्रा न
पीलावै ताको ॥ पदे ६ ॥ सबै स्रजी ग्यानि ॥ दे॰ ॥ चिटा सें घा
लू एा है स्रर पी पल सम भाइ ॥ हो टंक पी वहनी र सें स
वै स्रजी ग्यानि जाइ ॥ पदे ७ ॥ वै॰ ॥ दूएो की विघ ॥ दही दे
इ मे स्रनावे कोइ ॥ दो हिनरा व नु र्भन व होइ ॥ तीन से
रजन वदु ध स्र नाइ ॥ पाव स्रा गग प्र ग मे कराइ ॥ पदे ८ ॥ वै॰ ॥
दही दुध के बिच मिलाइ ॥ तव वनाव एा सो होइ तत काइ ॥
का लौ भिं नहिं नहोइ जाइ ॥ तव हा थें सें ले होव नाइ ॥ पदे ९

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चौ०॥ मांडे बीच लेहु कढाइ॥ पानी का ढोहा घलगाइ॥ टिकी
जैसा थाली पाइ॥ मलेहा घउ उह पानी पाइ॥ ६००॥ चौ०॥ जा
मे दुहु दिस लूणल वाइ॥ पेहले दिन नूं छूं तु रखाइ॥ राव
हू सरे धप सुकाइ॥ राव तीसरे ताको छड़ाइ॥ ६०१॥ चौ०॥ केर
घीउ मो तलके पाइ॥ जे भुनण की होइ चाह॥ मिरचै सीष
ल गाव हु ताह॥ मुंने ताह षंड गपार तपाइ॥ ६०२॥ चौ०॥
सीतल पाणी लेहु डुवाइ॥ फेर फेर के ताह पकाइ॥ लाल
होइ भुजे तु वषाइ॥ उसका पाणी राष छुनाइ॥ ६०३॥ चौ०
जे कफ चाहे फेर रखवनाइ॥ सेर होइ दूध चौहडु श्रनाइ॥ म
ग श्रागवरग मे करावे॥ डेड सेर उह पाणी प [illegible]॥ ६०४॥
चौ०॥ जो पनीर ते निकसा भाई॥ पिठ लीत रेंपनी रखना

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वै०क
५८

इ॥पानीजोनिकसेसोरषावे॥दससदिनपानीमलारहावे॥
६०५॥वैौ०॥पानीछौरदहीकीषावे॥टिकीस्नानकेवा
उलगावे॥६०६॥कुटकीविद्य॥वैौ०॥काचीफुटस्नान
बनाये॥टुकडेकरकेबीजनिकारे॥लूणबुसारहिंगुवि
चपाइ॥जंलेघीउमेछकरलाइ॥६०७॥होरा॥वैौ०॥फु
टउग्रलीतरेविनाइ॥जंलेघीउमेछकनवाइ॥स्वादभ
लाहैदेहनमेंस्राह॥जिहरूचहोवेतिहरूचषाह॥६०८॥
ल्याविरोटीकीविद्य॥वैौ०॥मेदाघीउमिश्रीस्नान॥रोटी
नौतेलेहसमान॥टेहतीनोकोलेहरलाइ॥ताकेबीच
नपामीपाइ॥६०८॥वैौ०॥रोटीकीजेपालीपाइ॥पा
लीरावकंव्रग्यारतपाइ॥तर्कसेकतेजववकजाइ॥तर्क

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ह्रसरीपलटपकाइ॥ दू १०॥ चौ०॥ होइकरारीहेहककंठइ
स्वादभलाहिहैकोषाइ॥ दू ११॥ मिहमोलीकीविध॥ चौ०
मिहमोलीकचौलेआ३॥ ताहकौलकेवीजकठाइ॥ ता
कोलीजेनीरउवाल॥ घी३ हिंगकोतुडकागल॥ दू १२॥
तलकेमठमाहरलाइ॥ साईलूनपाइकैषाइ॥ दू १३॥ हो
रविध॥ दू०॥ मिहमोलीकेंआनकेउप्रतरहकनाइ॥
घी३तलकेंताकोतलैपाकहोइतवषाइ॥ दू १४॥ मिरी
सगोती॥ चौ०॥ पकासेरमासञ्चनाइ॥ पंद्रापैसेघी३त
लाइ॥ पाचपैसेभरवाटीपाइ॥ मंदअग्रनसुताहसुका
इ॥ दू १५॥ चौ०॥ डेटसेरवकादुधपाइ॥ मिश्रीवीसपांच
सिरसाही॥ होइरसमसालेतामहपाइ॥ जवतआरहोइतव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

काइ॥ दूहा॥ वनीवकीविध॥ चौ॰॥ छोटा वकरा जव हि
कराइ॥ लेह चुसत्तात ही कठाइ॥ पेड़ तांका झाका कीजे॥
लूण वाइ कैता गिसि वीजे॥ दूहा १७॥ चौ॰॥ गुष चूसते भांडे
पाइ॥ लासगा डीहू घ झनाइ॥ मुह वांघो भांडे विच पाइ
ताको घरापवहिन चार॥ दूहा १८॥ चौ॰॥ तुर्श होत तत वटे
त निकार॥ सेर दुध तव लेहो झ्म नाइ॥ दोष से विच टस्सी
पाइ॥ जुगमे दुधकु वडे पाइ॥ दूहा १९॥ चौ॰॥ पाणी का ढेहा
ष लगाइ॥ गाढा हो इटोकरी पाइ॥ उपर भार देइ जी वेत्ता
हा॥ लेह टोकरी विच कढाइ॥ दूहा २०॥ चौ॰॥ चार तर्क ति
हल लूण लगाइ॥ ताको केर टोकरी माह॥ आछे होइ हिव
सहो जाइ॥ करे साल नाकैं तल वाइ॥ दूहा २१॥ चौ॰॥ स्वा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

र भला है कैं भुनषाइ ॥ दू २२ ॥ छाह के गुण ॥ चौ० ॥ काव जुगो
की छाह कहाइ ॥ मिठा कैला सा स्वाद बटाई ॥ हलकी गमि
भष लगावै ॥ र वउवजै वलु घुटकरावै ॥ दू २३ ॥ चौ० ॥
वाइ कढि दि विस हो अमिटाइ ॥ वांड रोग संग्रहणी जाइ ॥ सो
भमे उदहि मै आवै ॥ मगरोग विषम जु रजावै ॥ दू २४ ॥ चौ०
भमे उभ गंद स्वर्णी विकार ॥ गोला वाइ सूल अतीसा
र ॥ चर वीउ दरोग जिहि हो इ ॥ अवर प्लीह कों देता बोइ ॥ दू
२५ ॥ चौ० ॥ जिहि देहि मै हो इ वाइ ॥ पीवै छाछ लूण विचपाइ
जों के पित हो इ अधिकाइ ॥ षंड पाइ के छाछ पीआइ ॥ दू २६
चौ० ॥ लूण मरच पीपल विचपाइ ॥ सेंधे संग छाछ कफ
जाइ ॥ मूत्र रोग होवै तन जाहि ॥ गुड के संग पीजी ऐ छाहि ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वै०क
६०

६२ ॥ चौ० ॥ चिंता वाइ के छुछु पीआवे ॥ पांडु रोग ताहू को
जावे ॥ सीत हिंगलू खा विष पावे ॥ पीवे छुछु मवे सी जावे
६३ ॥ चौ० ॥ अतीसार अरु खांड ॥ पेट सुघ पुहकरा इ
सूल मिटे अरु दतस मजाइ ॥ ६४ ॥ चौ० ॥ द व पुरी अंग्र
त जौउ आह ॥ रोग मिटे औषध जेवाइ ॥ होइ अपच वौह
त घुत जाइ ॥ छाछु पीवे जो रोग घटाइ ॥ भस्म होइ फिर खा
ह वे धाइ ॥ ६५ ॥ चौ० ॥ रोग सोग जग को वितु हार ॥ ताह
ने होइ तनु तनु पेमु दार ॥ ६६ ॥ इति श्री वैमकतूहले सं
पूर्णं समाप्तम् शुभमस्तु ॥ शुभमस्तु ॥ दो० ॥ सरस्वती की कृपा से ।
लिख्यो बैमकतूहल ॥ गोतम रिष के वंस मै वंनाराम ज
ह नाम ॥ पुनः ॥ दो० ॥ उनीसे अरु सात मो पोष मास बुधवा राम्र
६

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

र॥ गुरू तेगबहादुर नम मे लिख्यो ग्रंथ यत्र पार॥ २॥ शुभम
ॐ श्री गणेशाय नमः॥ उत्पत घर तीर्थ का सत्गुर बाबा काल
पुर्ब ग्रा पहीआ पचा सुनि या ग्राग्या नरेकार जी की मा
ल उत्पत होई॥ तब हम में गग्रा कुली नागो का कीजे॥ जे
किसी ने सपडसे तो हम में ग्र पडे॥ रको ग सैवा री विसउ
डे मूछा हो वे ग्रमे ग्रर की आग्या होई॥ पहले चटे ग्रूं ने
त नाग नागो का कम सब मंडन घन चलो बास के घर ती
उ विहंडन॥ तो वो चलो घर हह रोम न नचो हसो विहा ॥॥ प
हले गुर सिब चू रमित्स की आपि स्रा ॥॥ जेहु ता तेरी लु
हलु ही सु निकाली नागन कूट ल टा घटि मरु पराम हा
देव विसालित॥ जजरा भग्रा वास कुरा ज्राही काल की मा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बे॰क
६१

टीककथनेतमधवीलीधरख्यावनदकजिनरोमरेम्रा
जोजाणसंसारीभेउजातेपजेगणपतिदेवगणपतन
जे॥कानकिरजेपहलाफलवनाइकेदीजे॥हजाफलवे
कारितीगुरकेपांउपरीजे॥गुरसंक्रागुरसाहरगुरबि
नभाउभगतिकिउकीजे॥गुरबिनसजिनदीवाहीजे॥गु
रमातागुरपितापगलागोसीसमनाउ॥गुरबिनागु
णराजाब्रहेसउछवेतिसमाल॥क्यासततामैभंतानेउग
रेपताल॥तेहतातेहूताब्रवदनसवदनउंकार॥नादनवे
दनधंहकारा॥ताकेवेदनपावोणपाणीनपाधरतीअ
कासलोहकलममकामहीनाब्रशीकुशीपेणपाणीव
हरायाधंहकारपा॥रातादिनरोकसीपी॥किहमजी

कहंपैकौलकेकुलमैपैगरडकीअससवारीमापैतिल
कलकडीतोछहंतनकरी॥ सवाटंकपारीसमुद्रप
रासमेइकमालीकीआकापापीकीआ॥ सुकउतीक
उकेआतोसमुद्रमपआसमुद्रमहितेकापकपानिका
येआ॥ नौनापउनवेजावीर॥ उकोतरसौहापीउकोत
रसौडकणीवेदकतिवबेदवूलाकोदीवे॥ छेभारराजा
कासवकेकौनकौनजाइ॥ आदस्याआदिस्यामगधनी
ताअरजनजमपाउली॥ आदिस्याकेदेवभयेमगाके
सवालाषब्रवतभयेकाइवेतीकेआदितवेतीकेअघ
कुलीनागभयेनागोकावडनागअंघघेनअंघघअंघघ
कानरेघ॥ नरेघकासेतसेतकासनतोबसनतोबकास

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बे०क.
६२

गरसगरकावगरवगरकाहोमहोमकाघोमघोमका
घोलीघोलीककाकसकसकाकासवकासवकावेदा
दाह्मावासक॥ तहतीकभोएज्ञादाज्ञाडसेज्ञाजिनघंन
तरवैदगारूडूडसिज्ञा॥ तहत्तीककीउलाहग्रज्ञगरव
ज्ञगरगौहवेगरडे॥ घोलकदाहचुगनेमगनेहगग
नेकुगनेचुटिज्ञालेभुडिज्ञालेहवेवीयदुदसाह॥ उडं
तीविघुडंतीवेल्लहल्लहेचुहचुहे॥ मैनीपघौनीपसिंघ
साहूपीलेपयोहत॥ ज्ञसैसनागज्ञवुधनागज्ञघरूपीज्ञ
घदावलीवादमारविसउछहेमैउजघुमघुमकार
विसईसरवाईवे॥ हैगोरज्ञाकीहमनलाईवे॥ हैब्रसा
संजोगकरेवंवेघर्नज्ञकास॥ ज्ञसमानकेमेजोदाज्ञाई

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

इडरे॥ धरतीकौंभेजौंस्वर्गकुलीनागडरेकटीस्वर्गैनकी
मंडूवली॥ नजरानाभराहरि हरेजनरेधौवियेधापितौ
णाचूमारीकीधविलौणाचमारीकामंडीस्वागारूड्की
स्वागपामहादेवपाहस्वागपा॥ जागरेजागडागरेविसमहा
देवकापतरमहादेवपाहलैजाह॥ इसमंत्रकौंजेकोईप
डेफडेहकाहोइमोरिश्वाहोइतांभीहक्काहोइ॥ होरसब्रमे
खरकीगतिप्रमेखरजाणे॥ ७॥ इति शुभमस्तु॥ मस्तु शुभमस्तु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वृक रा त दा के ए गर भ प का ए दे वा जो त क पे
जावे सै ह त सरद पानी वी च पिला कर पं ज
मि त काल सौ ए दे वे ले डी त्रा री नो पिलावे जे
कर ना फ वि च म रो त्रा पे चु रा ज पुजे गर भ वे
तो हि नही तां नही ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥
तिस रा जरां वीद कहि दे जि रे दी त्रां ज त्रां क
टकर सै ह त मै मला डे नि ले रे सु म नो ल गा
क नि रे हार सा का ज ठा वे भ गा वि थे
दु पे न र त क कु ढ ना बा वे जे कु कं ढ
नही सु वाद मल प कं दा हा रं भ वा ले
न हि जे सो आ द कि ठ म ल प को वे
जो वे ढ जे सो आ द को त्रा हि वे जां

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative